॥ अर्हम् ॥

श्रीमज्जिनकृपाचंद्रसूरिविरचित.

गिरनार पूजा-स्तवनादि संग्रह.

जूनागढ निवासी सा. [illegible]जी उद्यानी और रतलाम-निवासि-
बाईने छपाया।

द्वितीयावृत्ति प्रति ५००
वीर० नि० २४४५] विक्रम सं १९७५ [ई० १९१९

मुद्रक -
मूलचंद किसनदास कापडिया 'जैनविजय' प्रिंटिंग प्रेस,
खपाटियाचकला, लक्ष्मीनारायणवाडी-सूरत।



Printed by Ishverlal Kasandas Kapadia
at "Jain Vijaya" Printing Press Khapatia chakla Surat.
and
Published by Dhanrajaji Jhunbani
Narsingarh (Malwa).



अनुक्रमणिका ।



श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरिजी महाराजके उपदेशसे

प्राचीन पुस्तकोद्धारफन्डके तरफसे

छपते ग्रन्थो।

ग्रन्थ	मददगारका नाम	गाम
१ गणधरसार्धशतकः	बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल,	बम्बई
२ जयतिहुअणवृत्तिः	सेठानी आनन्दकुंवरबाई,	रतलाम
३ प्रश्नोत्तरसार्धशतकः	जव्हेरी फकीरचंद घेलाभाई,	सुरत
४ दीवालिकल्पः प्रा० सः	गलालचंद शीवजीवोरा,	कच्छमुन
५ विशेषशतकः	लखमीचंद वेद,	आगरा
६ प्राकृतव्याकरणम्	हीरालाल रिखवदास	मेदपुर
७ संदेहदोलावली	हेदराबाद संघ–गुलाबचंद गोमाजी–	आच्छारी
८ पंचलिंगीप्रकरण	पीतांबर पनजी	बुहारी
९ कल्पभाषा	जव्हेरी हीरालाल केशरीचन्द,	नागपुर
१० चैत्यवन्दनकुलकवृत्तिः	बलदेवदास सुगनचंद मदनचंदजी-मुगटी,	बीकानेर
११ बृहत् स्तवनावली	कमराबाई,	सुरत
१२ दादासाहेब चरित्र	संघ०	हेदराबाद

ग्रन्थः पदद्गारका नाम गाम

१२ दोपप्रतिक्रमणं–गुलाबबाई, नगड

१३ श्रावकनित्यकृत्य संग्रहः–थानमलजी सुगनमलजी, हैदराबाद

१४ गिरनारपुजास्तवनसंग्रह–चतरामजी मंछाजी, नरशिंगड़

१५ पौषधविधिप्रकरणं–गलालचंद शीवजी० वोरा कच्छभुज

१६ पंचप्रतिक्रमणं–संघ, प्रेम कापी

१७ संवेगरंगशाला:–नव्हेरी प्रेमचन्द कल्याणचन्द, सुरत.

१८ आचारंगदीपिका

१९ अनुयोगद्वारसूत्र

२० ऋषिमंडलवृत्तिः वादिहरखनंदनकृत

२१ जम्बूद्वीपपन्नति जैनहंसीटीका

२२ प्राकृतश्रीपालचरित्रं

२३ बारेपर्व व्याख्यान हिन्दीभाषान्तरं



अर्हम्

गणधरेन्द्रो विजयतेतराम्

जैनाचार्य श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरिविरचिता

श्रीगिरनारजीनी पूजा

लिख्यते ।

॥ दोहा ॥ स्वस्ति श्री मंगलकरण । पंचमगतिपाम जिनंद ॥ प्रणमी पदपंकज सदा । प्रभुना धरि आनंद ॥ १ ॥ तीरथ जगमांहि घणा । तेहमा अछे विशेष ॥ शत्रुंज रैवतगिरिवर । वर्णन करूं हमेश ॥ २ ॥

॥ दुहा सोरठा ॥

सोरठ देश सोहामणो । सकलदेशा सिरदार । तेमांहि तीरथ प्रगट । श्रीगिरिवरगिरनार ॥ ३ ॥ कल्याणक जिहां त्रण, थया । दीक्षाज्ञान निर्वाण ॥ नेमिजिणंद वखाणिये । यादव कुलनभ भाण ॥ ४ ॥ पूजारचु गिरिराजनी । मनमां धरि अतिखंत ॥ पूजानी विधिमेलवी । भाव अधिक उलसंत ॥ ५ ॥

ढाल रागनी देशाक झप्ताल

अंनन रागेण गीयंत ।

पूर्वसुख सावनं करिदुरान पावनम् । एदेशी पूर्व-भवी शुचिथई शुद्धअनुभव लई ॥ करधरि कलश शुचिजल उदारम् ॥ १ ॥ पद्दिर खीरोदकं बांधि मुहकोशकं ॥ धूपवासित सदोत्तरीय सारं ॥ २ ॥ गंगा-सिंध्वादिना खीरसागर तणा । तीर्थजल औषधि मिश्रकीजे ॥ सि० ॥ ३ ॥ आठ जाती-तणा कलशभरि सुरगणा स्नात्र प्रभुनी रचेसुर गिरीन्दे ॥ अ० ॥ ४ ॥ इम भविभावकरि शुद्ध समकित धरि । जिनतणी पूजकरो चित्त धारि । अ० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञान शक्तये गिरिनारगिरौ श्रीनेमिजिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ २ पूजा ।

दोहा ॥ नेमिजिणंद दिणंदसम । शिवसुख लख्नोकंद रैवतगिरिवर मंडणो । पूजनकरो अखंड ॥ १ ॥ घसकेशर मृगमदवलि बावनचंदन संग । अम्बर घनसार मेलवी करो विलेपनअंग ॥ २ ॥

॥ रागनी भैरवी ॥

विलेपन करिये प्रभुजीके अंग ॥ वि० ॥ जिनवर-कोतनु फरसन सेती । पावेजिन गुणसंग

॥ वि० ॥ पारसफरसत लोहा कंचन, तिम होवे कीटकभृंग । वि० ॥ २ ॥ शिवादेवी अंगजहोमप्रभु, श्यामवरण युति चंग । वि० ॥ ३ ॥ चरण युगल कछपसम प्रभुना करपंकज जलसंग । वि० ॥ ४ ॥ वदनचंद्र अकलंकिन कीनो भालअर्ध शशि अंग । वि० ॥ ५ ॥ निलोत्पलसम नेत्रयुगल फुनि, काम-राग धर्यो भंग । वि० ॥ ६ ॥ केशरचंदन मृगमद अम्बर प्रभुपूजो मनरंग । वि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं० केशर चंदन यजामहे स्वाहा २

अथ ३ पूजा ।

दोहा ॥ तृतीयपूजा जिनवरतणी करे भविक उजमाल । फलसुगंधी लेईने चाढेभरि भरि थाल ॥ १ ॥ समवसरणमां सुरकरे पुष्पवृष्टिवरिभक्ति, तिमश्रावक शुभ भावथी पूजाकरे यथाशक्ति ॥२॥ रागनी वृंदावनी सारंग ॥ प्रभु अरचा रचो मिल भविजना । नानाविधना फलसुगंधी लेईतुम धावो उकमना प्रभु० ॥ १ ॥ त्रिकरण योगकरी प्रभुपूजो थिरावरी शुभभावना ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ चारनिक्षेपे जिनवर जाणो । मनमंदिर मेंठावना । प्रभु० ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वार आवश्यकसूत्रे चंदनिक्षेप सुहावना । प्रभु० ॥४॥ ठवणासमरसरण त्रिहु दिशिमा प्राचीर भावकहावना । प्रभु० ॥ ५ ॥ द्रव्यांजिनवर श्रेणिक

ढाल रागनी देशाक झपताल

अनेन रागेण गीयते।

पूर्वमुख सावनं करिद्रान पावनम्। एदेशी पूर्व-अवी शुचिथई शुद्धअनुभव लई॥ करधरि कलश शुचिजल उदारम्॥ १॥ पहिर खीरोदकं बांधि मुहकोशकं॥ धूपवासित सदोत्तरीय सारं॥ २॥ गंगा-सिंध्वादिना खीरसागर तणा। तीर्थजल औषधि मिश्रकीजै॥ मि०॥ ३॥ आठ जाती-तणा कलशभरि सुरगणा स्नात्र प्रभुनो रचेसुर गिरीन्दे॥ अ०॥ ४॥ इस भविभावकरि शुद्ध समकित धरि। जिनतणी पूजकरो चित्त धारि। अ०॥ ५॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञान शक्तये गिरिनारगिरौ श्रीनेमिजिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा॥ १॥

अथ २ पूजा।

दोहा॥ नेमिजिणंद दिणंदसम। शिवसुख लच्छोकंद रैवतगिरिवर मंडणो। पूजनकरो अखंड॥ १॥ घनकेशर मृगमदवलि बावनचंदन संग। अगर घनसार मेलवी करो विलेपनअंग॥ २॥

॥ रागनी भैरवी॥

विलेपन करिये प्रभुजीके अंग॥ वि०॥ जिनवर-कोतनु फरसन सेती। पामेजिन गुणसंग

॥ वि० ॥ पारसफरसत लोहा कंचन, तिम होवे कीटकभृग । वि० ॥ २ ॥ शिवादेवी अगजहोप्रभु, श्यामवरण द्युति चंग । वि० ॥ ३ ॥ चरण युगल कछपसम प्रभुना करपंकज जलसग । वि० ॥ ४ ॥ वदनचद्र अकलंकित कीनो भालअर्ध शशि अग । वि० ॥ ५ ॥ निलोत्पलसम नेत्रयुगल फुनि, काम-राग थयो भंग । वि० ॥ ६ ॥ केशरचंदन मृगमद अम्बर प्रभुपूजो मनरंग । वि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं० केशरं चंदन यजामहे स्वाहा २

अथ ३ पूजा ।

दोहा ॥ तृतीयपूज जिनवरतणी करे भविक उजमाल । फूलसुगंधी लेईने चाढेभरि भरि थाल ॥ १ ॥ समवसरणमां सुरकरे पुष्पवृष्टिधरिभक्ति, तिम श्रावक शुभ भावथी पूजाकरे यथाशक्ति ॥२॥ रागनी वृंदावनी सारग ॥ प्रभु अरचा रचो मिल भविजना । नानाविधना फूलसुगंधी लेईतुम धावो इकमना प्रभु० ॥ १ ॥ त्रिकरण योगकरी प्रभुपूजा चित्तधरी शुभभावना ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ चारनिक्षेपे जिनवर जाणो । मनमंदिर मेंध्यावना । प्रभु० ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वार आवश्यकसूत्रे चेदनिक्षेप सुहावना । प्रभु० ॥४॥ स्थापनासमवसरण त्रिहु दिशिमा प्रार्चा भायस्हावना । प्रभु० ॥ ५ ॥ द्रव्यजिनवर श्रेणिक

ॐह्रीं० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ६ पूजा ॥

दोहा ॥ अक्षत अक्षत लेईने । स्वस्तिक रचो विशाल ॥ ज्ञानादिक गुणपुंजथी । पामो मंगल माल ॥ १ ॥ राजीमतीको छोडकै, नेमि चढ्या गिरनार ॥ रथ नेमि राजी सती लियो संयमभार ॥ २ ॥

॥ रागनी साढ ॥

नेमीजिन पुजोतोही ॥ प्रभुरैवतगिरि सिणगार । नेमि जिन० आंकणी ॥ उत्तमशालि प्रमुख बहुअशनं । चाढोतोलही ॥ अक्षयसुख कारण जगतारण ॥ जिनवर शरण ग्रही । प्रभु० ॥ १ ॥ आधेयथी आधार अनोपम । जगमे लोभलही । श्रीगिरनार नेमि फरशनतें कीर्त्तिव्याप रही । प्रभु० ॥२॥ भरत नरेश्वर संघलेईने, शेत्रुंजयात्रा लही ॥ चैत्य निर्मापण नवीन करीने, रेवत मार्ग ग्रही । प्रभु० ॥ ३ ॥ स्वर्णगिरिपर नेमि जिणंदनो । माणि कनकादि मयी । देरासर नवीन रचीने । नेमिनी पाडिमा ठाही । प्रभु० ॥ ४ ॥ कोड देवसे ब्रह्मेन्द्र आयो, भतरनोसुजसकही । पहिलो उद्धार प्रथम चक्रिनो, एम अनेक लही । प्रभु० ॥ ५ ॥ गिरिवर मंडण नेमिजिनेशर । भेटो भावलही

सिद्धि सौध चढवा मनरगै, । सोपानपंक्ति कही प्रभु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं० अक्षत यजामहे स्वाहा ॥६॥

॥ अथ ७ पूजा ॥

दोहा । सातमी पूजा साचवै, श्रावक शुचि शुभभावे । भांत भांत नैवेद्यना, थाल भरि भरि लावे ॥ १ ॥ नेमनगीनाजायने, आगलधरो मनरग॥ अक्षय सुख वरवा भणी, पूज करो चितचंग ॥२॥

॥ चाल लूहर सारंग ॥

रामत रमवा मे गई एदेशी । नेमि जिनेसर पूजीये, एतो रैवतगिरिनो रायो हे माय ॥ नेमि० ॥ समवसरणमे बैसिन । एतो वचनामृत वरसायो हे माय । भव्य हृदय भूसीचीने । एतो बोधि बीज निपजायो हो माय । नेमि० ॥ १ ॥ मेघध्वनि जिम गाजता, एतो सबचतुर विध ठायो हे माय । देश विदेशमां विचरता, एतो शिवमारग दरसायो हे माय । नेमि० ॥ २ ॥ सेत्रुज गिरिवर फरशने । एतो गिरिनार नाथ कहायो हे माय । अढारमहस वाचयमी । एतो वरदत्तादि गणरायो हे माय । नेमि० ॥ ३ ॥ चालीससहस्र श्रमणीभली एतो-यक्षणी प्रमुख सुहाया हे माय। एक लाख गुणोत्तर महस एतो श्रावकनो समुदायो हे माय। नेमि० ॥ ४ ॥ त्रणलक्षअढार सहसवली, एतो सुजश

श्राविका पायो हे माय भोज्यपदारथ थी प्रभु पूजी एतो अनाहार नामकहायो हे माय। नेमि० ॥ ८ ॥ इति ॐ ह्रीं० नैवद्यं यज० ॥ १ ॥

॥ अथ अष्टमी पूजा ॥

दोहा ॥ परम पुरुष परमातमा। परमानन्द प्रधान ॥ परमेश्वर प्रभु पूजिये परम विज्ञान निधान ॥१॥ अष्टमी पूजा जिन तणी, अष्टमी गति-दातार, फल पूजा करो भाव सुं। जिम लहो सुक्ख अपार ॥२॥

॥ रागणी काफी त्रिताल ॥

उज्जयंत गिरिगुण गावो। तुमें मणिमाणिकसे वधावो। उज्जयंत० नेमिजिनेसर जगअलवेसर, मन मंदिरमां लावो ॥ जिनवर चरणनो शरण ग्रहीने समरणमां लयलावो ॥ मणिमा०॥१॥ तीर्थपती बा-वीसम स्वामी, नेमि निरंजन ध्यावो। भविक जीव सुखकारण तारण, जिनदरशन मन भावो मणि० ॥ २ ॥ दोय भेद दरशनना जाणो। शुद्धाशुद्ध स्वभावो शुद्धदरशनथी निज गुण प्रकटे। आतमगु-णहुलसावो। मणि० ॥३॥ काल अनादि-भववनमे भटकत कर्मरिपो गण दावो। कृपा करी मुज दरशन दीजे ॥ अनुभव अमृत पावो। मणि० ॥ ४ ॥ नाना जातीना फल लेईने, आगल प्रभुजीने

ठावो । कृपाचंद्र यह फलपूजासे, मनवांछित फल पावो । माणि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० इत्यादि फल यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ अथ पूजा ९ ॥

दोहा—नवमी ध्वजनी पूजना । लावो जिन दरबार ॥ सधवस्त्री लेई करि करे प्रदक्षणा सार ॥१॥ ॥१॥ धवलमंगलगांताछतां वाजित्र विविध प्रकार । कैलासगिरिना शिखरपर । आरोपोसुविचार ॥२॥

॥ राग श्री ॥

जिनगुणगानं श्रुत अमृत ॥एदेशी॥ ध्वजपूजन करो सुख सदन ॥ध्व०॥ सहस्र योजन दंड मनोहर । सुवरणमय जनमन हरण ॥ ध्व० ॥ १ ॥ किंकिणी रणकत शब्द मनोहर, दिव्यध्वनि सुखकर श्रवण॥ ध्व० ॥ २ ॥ एक हजारके अष्ट ऊपर वलि । सोहे पताका पचवरण । ध्व० ॥ ३ ॥ मंद समीर प्रचारे लहकती । मानु स्वर्गथी अवतरणं । ध्व० ॥४॥ मनमोहन ए ध्वजनिरखीने । भविने परमानन्दकरणं । ध्व० ॥ ५ ॥ इण गिरिके पट्नाम सुहकर नन्दभद्र गिरिसुखकरण ॥ ध्व० ॥ ६ ॥ आषाढसुदी अष्टमी दिनकीनो । शिवरमणीको कर ग्रहणं । ध्व० ॥ ७ ॥ पांचसे पद् त्रिशत मुनि साथे । सादिअनन्त

स्थितिवरणं । ध्व० ॥ ८ ॥ ॐ ऱ्हीं इत्यादि ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ॥ ८ ॥

अथ दशमी पूजा

दोहा । दशमी मंगल पूजाना, अष्ट मंगल लिखसार ॥ रजतना तंदुल लेईने अखंड उज्वल मनुहार ॥ १ ॥ पुष्पवृष्टिकरें सुरगणा, पंचवरण सुविशाल ॥ योजन भूमंडले प्रमित, पूजो जगत-दयाल ॥ २ ॥ पासु जिनंदा प्रभु मेरे मन वसिया ॥ इसचालमें ॥ चालोभविकजन यात्रा करिये । यात्राकरिशिव संपतवरिये । टेक० ।

चालो० । जीर्णदुर्गना चैत्य जुहारी । तलहट्टिये जइ रात्रि रहिये ॥ चालो० ॥ १ ॥ श्रेणीसोपान चढीशुभभावे । नेमिजिनंदको ध्यान जोधरिये । चालो० ॥ २ ॥ प्रथमटूंकमें बिम्बप्रभुना अद्भूत आदि प्रलंब मनधरिये । चालो० ॥ ३ ॥ मेरुवसीप सुहा ?जिनमन्दिर निरखानिरखभवि मनमांठरिये चालो० ॥ ४ ॥ यहा अनेक जिनचैत्यनमिने । बीजीटूंक जिनचरणकुंवरिये । चालो० ॥५॥ रथने-मीजीको दरस सरसकरि । तृतीयाशिखर शासन सुरि सरिये । चालो० ॥६॥ चौथीनेमिवीर जिनेसर पंचमीटूंक नमी दुख हरिये । चालो ॥ ७ ॥ सहसा वनाजिन चरण नमीने चैत्य प्रवाडको इए परि

करिये । चालो० ॥ ८ ॥ गजपद कुंडनो नीरलईने स्नात्रमहोत्सवकरि सुखवरिये । चालो० ॥ ९ ॥ मंगलपूजनारिष्ट निवारक कृपाचन्द्रशिवपद अनुसरिये । चालो० ॥ १० ॥ ओं ह्रीं श्रीं अष्टमगलं यजामहे ॥१०॥ कलश रागनीधन्याश्री प्रभुजीको सुयश अम्बरघन गाजै रैवत गिरिनारको प्रभुमंडण। नेमिजिनन्द विराजे, तीर्थपतीना गुणगावतां रसना सफल कहाजै । प्रभु० ॥ १ ॥ श्रीखरतर गणनायक लायक जिनचारित्र सुरिरजे । गिरिनारगिरिनी स्तवनाकीनी श्रीसंघभक्तिनेकाजे । प्रभु० ॥ २ ॥ पंचतीर्थनी रच नारगे कीनी भविकहित काजे दरशन देखत अनुभवप्रकटे जिमसाक्षात गिरिछाजे प्रभु० ॥ ३ ॥ भगवइअग लालबागमें सांभल्योसंघसुकाजे । मयई वदर रहिचोमासो संपूरण हिन काजे। प्रभु० ॥ ४ ॥ सम्वत उगनीसें उपर बहोत्तर पोषधवलभृगु छाजे; दशमीदीन गिरनागुण गाया भावभले सुखमाजे । प्रभु० ॥५॥ श्रीजिनकीर्त्तिरत्न शाखावर, युक्ति अमृतगुरुराजे कृपाचन्द्र जिनस्तवना कीनी निजगुण निर्मल काजे प्रभु० ॥ ६ इतिश्रीगिरिनारपूजा ।

॥ अथ आरति लिख्यते ॥

जय । जय । जिनराया ॥ श्री नेमिजिनेश्वर राया । भविमिल गुण गाया० जय ॥ १ ॥ मंगल आरति पूजा करतां । भविने सुख छाया । मोक्ष-मारग दीपाया राजुलपतिराया ॥ जय० ॥ २ ॥ सिवादेवी नंदन वंदन । समुद्र विजय राया ॥ सौरीपुरमें जाया । द्वारिकापुरी आया ॥ जय० ॥ ३ ॥ रैवतगिरिके सहसा वनमें । दीक्षा सुरराया ॥ केवल रमणी पाया । शिवनगरी धाया ॥ जय जय० ॥ ॥ ४ ॥ इन विध पूजा आरति करीने सुख संपति पाया । सुम्बइ पुरमें सुहाया । पंचतीरथ राया ॥ जय जय० ॥ ५ ॥ भाव भले जिन भक्ति करतां । भविजनमन भाया । कृपाचन्द सूरिराया । मंगल वरताया ॥ जय जय० ॥ ६ ॥ इति

श्री

तीरथ जगजय काररे, भविवंदो आनंदे, वंदो आनंदे, वंदो आनंदे, तीरथ जगजय काररे, भवि-वंदो आनंदे—

श्री सिद्धाचल गिरिवर मंडन—आदि जिनंद सुखकाररे । भाविवंदो आनंदे वं. ती. ज. भवि. ॥ १ ॥

रेवत गिरिपर नेमिजिनेश्वर—भव दुःख भंजन हाररे। भविवंदो आनंदे, वं. ती. भवि ॥ २ ॥

समेतसिखरपर वीशजिनेश्वर—भेदन भवजल पाररे। भविवंदो आ वं ती. भवि. ॥ ३ ॥

अष्टापदपर चौवीशप्रभुजी—भरत भरायो मनोहाररे। भविवंदो आ वं ती. भवि ।४।

आबु गिरिपर आदि जिनंदा—तीर्थ परम आधाररे। भविवंदो आ वं भवि ॥ ५ ॥

मुंबई पंच तीरथ रचना—लाल बाग मझाररे। भविवंदो आ. वं. ती. भवि ॥ ६ ॥

उगणीसोबोंतेरे चौमासो—कृपाचंद्र परिवाररे भविवंदो आ. वं ती भवि. ॥७॥

भगवती सूत्र व्याख्याने वाच्यो-भवि जीवों हितकाररे। भविवंदो आ. वं. ती भवि ॥८॥

महोत्सव हुआ अति मनोहारी—जगजन आनंदकाररे। भविवंदो आ वं. ती भवि. ९

सूरि पद सबे मिलकर दीना—गुरु भक्ति विचाररे। भविवंदा आ. वं. ती. भवि ॥१०॥

पोषी पुनम गुरु शुभ लग्ने-जयजय शब्द उच्चाररे। भविवंदो आ. वं ती भवि. ॥११॥

सुमती सागर गुरु सुपसाये-मणीसागर दिल धाररे। भविवंदो आ वं. ती भवि ॥ १२ ॥

अथश्री वीसस्थानक चैत्यवंदन.

श्रीअरिहंत अनंत कांति सिद्ध निज गुण रामी,
प्रवचन अचारिज स्थविर उवझाया हितकामी;
साधु नाण दंसण नवम विनय चारित्र वखाणो,
ब्रह्म क्रिया तप गोयम जिन वेयावच जाणो ॥१॥
समाधि अपूर्व ज्ञान ग्रहै शुभ भक्तिनित सार,
तिरथ प्रभावन विसमो निरुपम सुख दातार ॥२॥
प्रथम चरम जगदीस सकल सेवी लही संपदा,
इक दो त्रण पद जपी बावीस जिनवर पदमुदा ॥३॥
ए विंशती थानक कह्या ए ज्ञाता ए जिनचंद,
ए सेवनथी भवी लहे त्रिभुवन पति कृपाचंद ॥४॥

॥ इतिश्री वीसस्थानक चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथश्री वीसविहरमानजीको चैत्यवंदन ॥

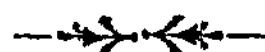
सिमंधर युगमंधर बाहु सुबाहु जाण,
सुजात स्वयंप्रभु सातमा ऋषभानन मन आण ॥१॥
अनंत विर्यने सूरप्रभु विसल वज्रधर कहियै,
चंद्रानन चंद्र बाहुजी भुजंग नेम प्रभु लहियै ॥२॥
इश्वर श्रीवधर सेनजी महाभद्र जिनदेव,
देव जस अजित विर्यजी सुरपति सारे सेव ॥३॥
पंच विदेहै विचरता ए वीस जिनेसर जाण,
कृपाचंद त्रिहुं कालमें नमतां कोड कल्याण, ॥४॥

॥ इति विस विहरमानजीको चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन ॥

सिद्धाचल सेवु सदा सहु तीरथ सिरदार,
सोरठ देश सोहामणो तिहां ए गिरिवर सार ॥१॥
तीन भुवनविच एहवो तीरथ कोइ न होय,
श्रीमधर वयणे करी शेत्रुंज महातम जोय ॥२॥
श्रीयुगादि जिनराजजी समवसर्या इण ठाम,
तेहथी ए तीरथ वडो अविचल सुखनो धाम ॥३॥
काति पुनिम दश क्रोड सुं ए द्रावड वारिखिल्ल जाण,
सिद्धि वधू रंगे वरया कृपाचंद मन आण ॥ ४ ॥

॥ इति सिद्धाचलजी चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥



॥ अथश्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥

चोविसम जिनवर नमु महावीर जिनदेव,
जाति सुधामन चंदलो सुरनर सारे सेव ॥१॥
नंदेसरमे दीपतो दरासर मनुहार,
वीर जिनेसर जग जयो बावन देहरी सार ॥२॥
त्रिसलानंदन जग धणी ए सुख संपति करतार,
त्रिकरण योग प्रणमतां कृपाचंद सुखकार ॥३॥

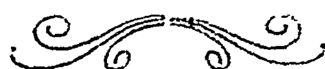
॥ इतिश्री वीरजिन चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥



॥ अथश्री नेमिजिन चैत्यवंदन प्रारंभ ॥

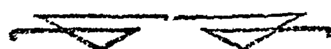
नेमिसर जिन जग धणी रैवत गिरि सिणगार,

यादवकुल नभ दिवमाणि भवियण ने सुखकार ॥१॥
तीन कल्याणक इहां थया दिक्षानाण निरवाण,
भव्य मनोरथ पूरवां चिंतामणी समजाण ॥२॥
शिव रमणी रंगे वर्या ए बाविसम जिनचंद,
कृपाचंद नितप्रति नमै शिवसुख तरुनो कंद ॥३॥
॥ इति नेमिजिन चैत्यवंदन संपूर्ण ॥



॥ अथश्री पुंडरीक गणधर चैत्यवंदन ॥

रुषभ जिनेश्वर रायनो पहिला गणधरदेव,
पुंडरीक नामे सदा सुरनर सारे सेव ॥१॥
चैत्री दिन शिव पुर लह्या पांच कोड परिवार,
पुंडरीक तेहथी थयो प्रगट नाम सुखकार ॥२॥
आअवसर पणिकालमांए प्रथम सिद्ध अभिराम,
कृपाचंद गिरिराजने प्रतिदिन करे प्रणाम ॥३॥
॥ इति पुंडरीक गणधर चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

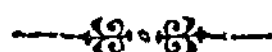


॥ अथश्री चतुर्विंशति जिनलांछन चैत्यवंदन ॥

रिषभ वृषभ गज अजितने संभव घोडो जाण,
अभिनंदनने वांदरो कौंच सुमति मन आण ॥१॥
पद्म पद्म स्वस्तिक सुपार्श्व शशिचंद्र प्रभ लहिये,
मकर सुविधि शितल श्रीवत्स श्रेयांस खडगी कहिये
वासुपुज्य महिषतणो विमल वराह नो जाणो,

अनत श्येन वज्र धर्मने शानि मृग पहिचानो ॥३॥
कुंथुनाथने बोकडो अर नंद्यावर्त होय,
मल्लीघट सुव्रत काछबो नमि निलोत्पल जोय ॥४॥
नेमि संख फणि पार्श्वने वीर सिंह कहाय,
कृपाचंद्र ध्वज युतनमु चउवीसे जिनराय ॥५॥
॥ इति चतुरविंशतीजिनलांछन चैत्यवंदन संपूर्णम ॥

॥ श्रीचंद्रप्रभुजीनु स्तवनं ॥



श्रीचंद्रप्रभु साहीबा शिववासी सुरनामीरे,
अरज करुं कर जोडने निसुणो त्रिभुवन स्वामीरे.श्री.१
काल अनादि लगे सही साधारण तरु पामीरे,
पृथव्यादिक मांहे लह्यो संख्यातीत दुःख धामीरे.श्री.२
काल संख्याते बि ति चउ पचेंद्रिपणो पामीरे,
नाना गतिना दुःख सह्या ते जाणो शिवगामीरे श्री.३
भवोदधि ताप निवारवा मे सुण्यो तुहीज कामीरे,
तिण तुज चरणकमलतणीसेवा अविचल धामीरे.श्री ४
तुं त्राता संसारनो तुहीज दीन उद्धारीरे,
सुजवल्लभ तु मुज धणी ओरनको ससारीरे. श्री.५
ज्ञायक ज्ञेयानंतनो लोकालोक प्रकाशीरे,
सुखघन मंदिर तें लह्यो तुंहिज छो शिववासीरे.श्री.६
उगणीसे पैतालीसमे वरधापुरे हितकारीरे,

फागणसुदीतृतीयादिनेप्रतिष्ठ्यासु उत्सवधारीरे. श्री.
युक्तिअमृत गुरुराजनी युक्ति प्रवर सुविचारीरे,
कृपाचंद्रप्रभुकीजिये संघ सकल सुखकारीरे. श्री.



॥ धर्मनाथस्वामीजीनुं स्तवनं ॥

आज आनंदभयो त्रीभुवनपति श्रीधर्मजिनेसर
भेटीया. आ.
प्रभुभानु पिता जसु छाजे छे सुव्रतामात विराजे छे
प्रभु देखी कुमति भाजे छे प्रभु देखी सुमति
गाजे छे. आ. ॥ १ ॥
प्रभु धनुष पैतालीस काया छे दशलाख वरष मन
भाया छे,
प्रभु रत्नपुरीमें जाया छे आज आनंदभयो
त्रीभुवनपति० ॥ २ ॥
प्रभु मस्तक मुगट कुंडल सोहे कंठे हार कर श्रीफल
होवे,
प्रभु देखत त्रिभुवनकुं मोहे आज आनंदभयो
त्रीभुवनपति० ॥ ३ ॥
प्रभु समवसरणमें विराजे छे जसु चोत्रीश अतिशय
छाजे छे,
प्रभु पांत्रीश वाणीए गाजे छे आज आनंदभयो
त्रीभुवनपति० ॥ ४ ॥

शुभ अग्निवेद निधिभूवर्षे वैशाख शुक्लसप्तमी दिवसे,
करी चैत्य प्रतिष्ठा अतिहरखे आज आनंदभयो
त्रिभुवनपति ॥ ५ ॥
श्रीरायपुर नगरे सुखकारी सुजाणमल पत्नी
पत्नी सारी,
जिणचैत्य करायो हितकारी आज आनदभयो
त्रिभुवनपति. ॥ ६ ॥
गुरुयुक्तिअमृतमुनि सुपसायें प्रवचनभक्तिअति
उलसाये,
कहे कृपाचद्र मुनि हरखाये आज आनदभयो
त्रिभुवनपति० ॥७॥

॥ नवपदजीनुं स्तवनं ॥

नव पद जगहितकारी मेरे भविगण. नव.
वारी जावुंवार हजारी मे० न.
अरिहंत सिद्ध अवर आचारज उवज्झाया मनुहारी,
सर्व साधु पंचम पद प्रणमो विषयविकार
निवारी. मे. न. ॥ १ ॥
दरसण श्रद्धानाण चरणयुत बारहविधतप जाणो,
ए नवपदना ध्यानथी निरुपम
परमातम पहिचानो. मे न. ॥ २ ॥
ए नवपद जे इकचित ध्यावे रोगादिक नवि होवे,

एहने ध्यावे अनुपमश्रद्धा आपरूपे करी जोवे. मे. न. ३
शुभ ओगणीसे तैयालीसे ज्येष्ट धवलमनहींसे,
विधिपूर्वक नवपदनी अर्चा भई त्रयोदशीदीसे.मे.न. ४
पारेख गोत्रे सेरसिंघपत्नी मृगमदानामे सनुहारी,
नवपदनो प्रसाद कराव्यो निशिदिन कृपा
हितकारी. मे. न. ॥ ५ ॥

॥ श्रीश्रेयांसजिनजीनुं स्तवनं ॥



राग देशी—छतीयां हरखभरीमें निरख्या गुरु महाराज. देशी.

सहुं संघ हरख धरी नितवंदो श्रेयांसजिनंद पामो
परमानंद सहु.
विष्णु पिता कुलचंदलोरे विष्णु मातानो नंद,
सींहपुर प्रभुजनमीयारे अधिक थयो आनंद. सहुं. १
कंचनवरण सोहामणोरे खड्गि लंछन प्रभुपाय,
चोरासी लाखनी स्थिति कहीरे धनुष असीनो
काय सहु. २
प्रभु दरसण जग दोहिलोरे अवरन दोहिलो कोय.
प्रभु दरसण पाम्याथकारे भव भव भ्रमण न होय.सहु.३
काल अनादि भमताथकारे पाम्यो नहि दीदार,
हिव प्रभुपदपंकज मिल्यारे प्रगट्यो हरख
अपार. सहु. ४

मे जाणु प्रभुथी सहीरे पूरव भवनो नेह,
तेहथी प्रभुने देषतारे जागृत थयो सस्नेह. सह्व ५
जिनप्रतिमा जिनसारखीरे शास्त्रतणे परमाण,
अनुयोगद्वारे भाखीयारे चार निक्षेप परमाण सह्व. ६
शुभ उगणीसे चमालीसमेंरे फाल्गुन सुदिसुखकार,
कृपाचंद प्रभु भेटीयारे पांचमी दिन सुविचार सह्व.७

॥ श्रीश्रेयांसनाथजीनुं स्तवनं ॥

राग–काफी–श्रेयांस जिनसेवा तुमारी भविजन
सुखकारी.
पुष्पादिक बहु विध सामग्री सज्ज करी बहु सारी,
सुरियाभसुर इव जिनवरनी पुजा करो संभारी. श्रे १
भगवइअंगे जिनवरवंदना कही गणधर सुविचारी.
जंघाचारण विद्याचारण वांदे विविध प्रकारी. श्रे. २
महानिशीथे चैत्यनिरमापण फल अच्युतचितधारी,
जंबुद्वीपपन्नतीये भाख्यो वदननिर्जराकारी. श्रे. ३
ज्ञाताअंगे जीवाभिगमे जिनवंदन अधिकारी,
आवश्यक पंचमअध्यने त्रिभुवनचैत्य जुहारी. श्रे ४
पचकल्पमांहि पगट पाठ ए पुजा प्रथम संभारी,
चारित्र ग्राहीने स्थविर करावे कृपाचंद हितकारी. श्रे.५

॥ अथश्री शांतिजिन स्तवन प्रारंभ ॥

पास जिनंदा प्रभु मेरे मन वसीया (ए देशी)
सांति जिनंदा प्रभु सेवो सुखकारी.
मांडवगढ मंडन दुःख खंडन,
तुम प्रभु भव भय दूर निवारी सां. ॥ १ ॥
अचिरानंदन तुम हो स्वामी,
विश्वसेन कुल दिनमणि कारी सां. ॥ २ ॥
पूरण ब्रह्म परमेश्वर जगगुरु,
अतिशय गुण गण चित न विसारी सां. ॥ ३ ॥
स्यादवाद जिन मुद्रा निरखत,
सांति स्वरूप निज हृदया धारी सां. ॥ ४ ॥
पंचकल्याणक पूजा बहु विध,
हरख धरी कृपाहित सुखकारी. सां. ॥ ५ ॥

॥ इति शांतिजिनस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथश्री शांतिजिनस्तवनं प्रारंभ ॥

समवसरण माराज आज छविनीकी छाजे हो,
(राग माड)
सांतिजिनंद माहाराज आजछवि अनुपम छाजे
हो. सां.
सांति स्वरूप सुज आत्म सुघटै,
निज अध्यात्म गुण गण प्रगटै.

परपुदगल चेतनथी विघटे,
परम आल्हाद विराजै हो. सां. ॥ १ ॥
तुम स्वामी सेवना सुखदाई,
इंद्रादिक करे अतिहरखाइ;
मिलसुरकुमरी मंगल गाइ,
अविचल सुख साजै हो. सां. ॥ २ ॥
भगवइ ज्ञाता जीवाभिगम वखाणो,
जिनप्रतिमा जिनवर सम जाणो;
इम ठवणा जिन मनमें आणो,
कुमति शठ लाजै हो. सां. ॥ ३ ॥
कायथापुरे अचिरा सुत सोहे,
उत्सव अष्ट दिवस शुभ होवे;
भेटे कृपाचंद प्रभु मन मोहे,
सुख संपति काजै हो सां. ॥ ४ ॥

॥ इति शांतिजिनस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथश्री चंद्रप्रभुजीनुंस्तवन प्रारंभ ॥



अखीया मेरे प्रभुजीमें आज लगी ॥ ए देशी ॥
छबि नीकी प्रभुजकी आज बनी ॥ छवि ॥
चंद्रवदन चंद्रा प्रभु स्वामी ।
दरिसणसे मेरी सुमति जगी छवि ॥ १ ॥

काल अनादकी संग ए कुलटा ।
जिन देखत मेरी कुमति भगी छवि ॥ २ ॥
सुक्षम बादर निगोदथी निकली ।
पंचेंद्री की जात सजी छवि ॥ ३ ॥
पुन्य संयोगे नर भव पामी ।
आतम अध्यात्म उलसी छवि ॥ ४ ॥
नागपुर संघ सहित प्रभु भेट्या ।
कृपाचंद सुभ मति विकसी छवि ॥ ५ ॥

॥ इति श्री चन्द्रप्रभुजीनुं स्तवन संपूर्णम् ॥

मिगसर अद्दा पुस्सो तिन्निय पुव्वाइ मूल असेसा,
हत्थोचित्तो य तहा दसवुडि कराय नाणस्स ॥१॥
गण विद्याप्रकीर्ण केसरीयाने. जाजकोलोकत्तिरायो
सेवो आदि रुषभ जिनंद सुखदाई. ए देशि.
एतो जिन पुजन चित लाई सेवो.
नाभिभूप नंदन जग वंदन.
मरुदेवी मात कहाइ,
श्वेत वरण मन मोहिनी मूरति,
वृषभ लंछन सुहाई सेवो ॥ १ ॥
जिनवर सम ठवणा जिन प्रतिमा,
कही गणधर अति साइ,
जैन शास्त्र वहु इण परि भाखै,
जिन पति पूजो भाइ सेवो ॥ २ ॥

सामेर पुरमे श्रीजिन भेटै,
प्रतिदिन अंघ सवाइ.
कृपाचंद श्री जिनवर वंदित,
निश्रेयस सुखदाई. सेवो ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीफलोधीपार्श्वनाथ स्तवन प्रारंभ ॥



फलोधि पासजी मुज प्यारारे,
प्रभु वंध्यां हरख अपारा ॥ फलो ॥
प्रभू जगत जंतु उपगारीरे,
अतिशय निज गुणना धारीरे;
सेवक जन वांछित सारी ॥ फलो ॥ १ ॥
ठवणा जिनवर गुण खाणीरे
ए तुज आगमनी वाणीरे;
कहि निरुपम सुख नीसाणी फलो ॥ २ ॥
आलंबन तुम तणो कहियैरे,
भविजन निज कारज लहियैरे;
जो जिनवर दरिसण पइयै फलो ३ ॥
उपादान कारणता प्रगटेरे,
जो निमित्त कारणना सुघटेरे;
परभावथी आतम विघटै फलो ॥ ४ ॥
प्रभु दरिसण शिव तरु कंदोरे,

प्रभू भेट्यां अधिक आणंदोरे,
कृपाचंद सदा जिन वंदोरे. फलो ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीफलोधिपार्श्वनाथस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजी स्तवन प्रारंभ ॥

जात्रीडा भाइ आबूजीनी जात्रा करेजो. ए देशी.
यात्रिडा भाइश्री सिद्धाचल भेटो
चिरसंचितदुःख मेटोरे,
यात्रीडाभाइश्री सिद्धाचल भेटो ॥ ए आंकणी ॥
ए महिमावंत विराजे निरखंता पातिक
भाजैरे या. ॥ १ ॥
श्रीवीरजिनेश्वर भाखै शत्रुंजयनी
महिमादाखैरे या. ॥ २ ॥
पुंडरीक गणधारी इहां सिद्धाकर्म
गणवारीरे या. ॥ ३ ॥
पांडव प्रमुख जे सिद्धा ए गिरि फरसीसुख
लीधारे ॥ ४ ॥
श्रीरुषभजिनेश्वर वंदो चितधरी अति अधिक
आनंदोरे या. ॥ ५ ॥
रायणतल पगलावारु प्रभुवंदी वंछित
सारुरे या. ॥ ६ ॥
पुंडरीक अतिदीपे निरखतां पातिकजीपैरे या. ॥७॥

चोमुख जिनवर सोहे देखतां भवि मन
मोहेरे या. ॥ ८ ॥
अदभुत निव छवि छाजै भेटभविसिव
सुख राजैरे ॥ ९ ॥
पाजैनडतां भावे गुण गातां वंछित पावैरे या. ॥ १० ॥
शेत्रुजय नदी अतिरूडी एहनी महिमानही
कूडीरे ॥ ११ ॥
उलखाजोल चेलणातलाइ सिद्धवड
सिद्धसिलावरटाइरे या. ॥ १२ ॥
ए गिरिवर पूजे भावे जे नरक नीगोद न
जावैरे ॥ १३ ॥
दरसणरी आस घणेरी ते सफली
सुकृतमेरीरे या. ॥ १४ ॥
अनुभव अमृतपीजे कृपाचंदसदासुजदीजेरे
या. ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवन सपूर्णम् ॥

॥अथ श्रीराणपुरजीनुं स्तवन प्रारंभ॥

॥ राग कालगडो ॥

रांणपुरे जिन वंदोरे भवियां रां.
मदन दुरित निकंदोरे भवियां ॥ रां. ॥
प्रथमजिनेसर प्रथमतीर्थंकर ।

प्रथमयति जग चंदो। प्रथम भिक्षाचार प्रथम नरेसर।
ए जिन सुरतरु कंदोरे भ. रां. ॥ १ ॥
चौविस मंडप चिहुं दिशि सोहे।
निरख्यां परम आनंदो।
आदीश्वर जिन चौमुख राजै।
जग तारण जिन चंदरे ॥ भ. रां. ॥ २ ॥
चौरासी प्रासाद विराजै।
जगत दिवाकर वंदो।
पांच प्रासाद छबि सुंदर छाजै।
प्रभु वंदी चिर नंदोरे भ. रां. ॥ ३ ॥
भुंयरा माहि बिंब मनोहर।
वंदे सुर नर इंदो।
भवि उर कमल विबोधन कारण।
जिनपति प्रगट दिनंदोरे ॥ भ. रां. ॥ ४ ॥
इंदोर संघ सहित प्रभु भेंटे।
काटण भव दुःख कंदो।
कृपाचंद मुज दरसण दीजै।
अनुभव रसनो वृंदोरे ॥ भ. रां. ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीराणपुर स्तवन संपूर्णम् ॥

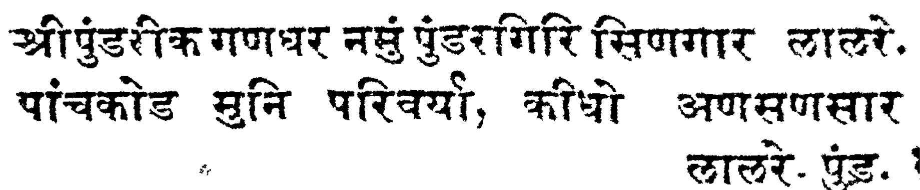
॥ अथ श्रीआबुजी स्तवन प्रारंभ ॥

श्रीआदि जिनेश्वर भेटीया आबूगिरि सिणगार हो

चक्रदेवीना नंदन तुम दरसण मुज मन वस्यो जिम मन
मद चकोर हो । म तु
जिम देखी जलधारने मोर करे झंकार हो । म. तु. ॥१॥
कुमुदनी रजनी कर लही कमलनी जेम दिनंद हो । म.
सागर जिम वधे चद्रथी तिम मुज मन आनद हो म.तु. २
नेमिसर जिन राजजी सांति सुधारस चंद ।
पारस जिनपति सुखकर
वंद्या कुशलमुनींद हो । म. तु. ॥३॥
अचलगढ अति दीपता सुवरणमय जिनदेव हो ।
चउगइ संकट चूरवा
सुरनर करे जसु सेव हो म. तु. ॥४॥
भवोदधि भ्रमणनी वातडी कहने कहिये जाय हो । म.
रागादिक रिपु गण भणी
दूर करो जिनराय हो । म तु. ॥५॥
आस हती घना दिवसनी सफल थई ते आज हो । म.
जनम कृतारथ माहरो
सीधा वंछित काज हो । म. तु. ॥६॥
तु परमेश्वर याल हो जीवन प्राण आधार हो । म.
भव भव चरणनी चाकरी
मुजने देज्यो हितकार हो । म. तु. ॥७॥
उगणीसें अठावन समे सुदि फागण रविवार हो । म.
सातम दिने यात्रा करी
कृपानन्द सुखकार हो । म. तु. ॥८॥

॥ इति श्रीआबुजी स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ शत्रुंजय पुंडरीकगणधरजी स्तवन ॥



श्रीपुंडरीक गणधर नमुं पुंडरगिरि सिणगार लालरे.
पांचकोड मुनि परिवर्या, कीधो अणसणसार
लालरे. पुंड. १
आदिसर जिन उपदिसे, ए तीरथ परसाद ला.
सिव कमला तुमे पामस्यो, मेटी सहु विषवाद ला. पुंड. २
तीरथपतीमां हुं अछुं, प्रथम तीरथ इमजाण ला.
प्रथम सिद्ध सिद्धाचले, तुमे पास्यो महिराण ला. पुंड. ३
प्रभुनी आणा आदरी, संलेखना चित्तलाय ला.
चैत्रीदिन सिवपुर लह्या, घातीकर्म खपाय ला. पुंड. ४
यात्रा विधिसुं कीजीये, जिनजी दियो उपदेश.
कृपाचंद गिरिराजनी, चाहे सेवा हमेश. ला. पुंड. ५

॥ तारंगे श्रीअजितजिन स्वामीनुं स्तवनं ॥

राग सोरठ—अजित जिन साहेबाजी प्यारा लागो
राज म्हाने । प्या. अ.
जित शत्रु विजयाके नंदन, तुम प्रभु गरीब निवाज
अ. ॥ १ ॥
तुं अविनाशी ज्ञान प्रकाशी, शिवपुर कीनो वास।

तुं भव वसीयो तुम गुण रसीयो, आयो तुम धरि
आस अ. ॥ २ ॥
महा गोप महा महाण तुमही, भव अटवी सथ वाह।
भवजलधि निर्यामक तुमही, निजगुण करे उछाह
अ. ॥ ३ ॥
तुं जग तारण वंछित सारण, तुम हो दीन दयाळ।
तु परमेश्वर परउपगारी, सेवक जन प्रतिपाल अ ॥४॥
तारगे श्रीअजित जिनेसर, सरसकूट मनुहार।
नदी समेत अष्टा पद वंदे, कृपाचंद सुखकार अ.॥५॥

॥श्री वरकाणो पार्श्वजिन स्तवनं॥



राग धाटो-वर भाव थीर मन धरके, वदु पार्श्वजिनंद.
पार्श्वजिन लागो प्यारा, तुज गुण अनत अपार
पार्श्व. ॥ १ ॥
मूरती मोहनी लागे, जागे पूरव प्रीत। पार्श्व. ॥२॥
जिनराज तुम उपगारी, तुम दीठा आनद पार्श्व. ॥३॥
वसु विध जिन पुजन करीए, वरीए सिव सुखसार
पार्श्व. ॥४॥
वरकाणे पार्श्वजिन भेटया, मेटया सहु दुःख दंद पार्श्व.५
वामा उदर दरि हरिवर, अश्वसेन कुलचद पार्श्व.।६।
धन्य दिन आज हमारो, वंदे नित कृपाचद पार्श्व.।७।

॥ श्रीनेमिनाथजीनुं स्तवनं ॥



राग काफी–आज धन्य दिवस हमारा, भैय्या श्री
नेमिजिनंद आ. ॥ १ ॥
गिरनारगिरिवर मंडण स्वामी, यादवकुल
नभचंद आ. ॥२॥
स्यामवरण छवी सुंदर सोहे, मोहे सुरनर इंद आ.॥३॥
मोह तिमिर भर दूरनिवारण, अभिनव प्रगट
दिणंद आ. ॥४॥
जगजन तारण विरुद सुणीजे,आयो धरी आनंद आ.५
निज गुण अनुभव अमृत दीजे,कृपाचंद सुखकंद आ.६

॥ श्रीआदिजिन स्तवनं ॥



आदि जिनेसर भेटीया सुखकारी हो. उपगारीरे हो.
शेत्रुंजगिरि सिणगार वाला छो,
नाभिभूप नंदन विभु सु.
मरुदेवी मात मलार वा. ॥ १ ॥
कंचनवरण सोहामणो सु.
धनुष पांचसे काय वा.
चउराशी पुरव लाख आउषो सु. ॥ २ ॥
वृषभ लांछन मन भाय वा.

जुगला धर्म निवारणो सु जगत नीति वरताय वा. भरतादिक निज सुत भणी सु. राज्य दीयो भोलाय वा. ॥ ३ ॥ अनुक्रमे दीक्षा आदरी सु. च्यारसहस परिवार वा. प्रथम पारणो हथणापुर सु. पडिलाभे श्रेयांसकुमार वा ॥ ४ ॥ पुरीमताल उद्यानमे सु. ऊपनो केवलज्ञान वा. मरुदेवी शिव थानक लह्यो सु. वदे भरत राजान वा.॥५॥ भुमंडल प्रभू विचरता सु आया सोरठ देश वा. ज्यां सिद्धाचल गिरिवरु सु सुरनर सेवे हमेश ॥६॥ वा. प्रभुजी आय समोसर्या सु. गणधर मुनिपरिवार वा समवसरण सुरवर रच्यो सु. देशना दिधि उदार वा. ॥ ७ ॥ तीरथ महिमा दाखवी सु. उत्तम तीरथ एह वा० रायणतल पगला ठवी सु. वदे धन्य नर तेह वा ॥ ८ ॥ फागण सुदी आठम दीने सु पुर्व नवाणु वार वा. यात्राफल जिनजी कह्यो सु जगत जतु सुखकार वा. ॥ ९ ॥ चौविह संघसुं परिवर्या सु प्रभुजी कीध विहार वा. अष्टापद सुगते गया सु. दशसहस परिवार वा. ॥१०॥ सास्वतो तीरथ ए सही सु. फरस्यां पातिक जाय वा कृपाचंद्र गिरीराजनी सु. सेवाथी सुख थाय वा ॥ ११ ॥

॥ प्रभासपाटण स्तवनं ॥

राग रेख्ता—आये प्रभासपाटणमे, चंद्र प्रभुका दरस पाया । वरस उगणीसे गुणसटे, चरणकंज देख सुख पाया. ॥ १ ॥ माघ वदि दुजके दिवसे, फरस करकीन खुसी काया । गए सब पाप अब मेरे, हरखसे नाथ गुण गाया. ॥ २ ॥ संभव जिन राज मन मोहे. पारस छबी स्याम स्तुति छाया । सांति प्रभु सांति मुज दीजे, परम सिव माहि प्रभु पाया. ॥ ३ ॥ चरम प्रभु वीरजी राजे, आदि जिनराज मन भाया । अजित जिन देख मन हरखे, नेमकी सील ग्रही छाया. ॥ ४ ॥ जगतमें देव सब निरखे, मेरे दिल कोई नहि भाया । प्रबल भये पुन्य अब मेरे, जगत गुरु देव मन ध्याया. ॥ ५ ॥ अमृतसम मुक्तिजिनवरकी, तहत कर चित्त ठहराया । मुजेहे आस सिवपुरकी, कृपायुतचंद्र उलसाया. ॥ ६ ॥

॥ श्रीआदिश्वरजिन स्तवनं ॥

राग घुमर—आदि जिणंद नित पूजिये, एतो विमलाचल गिरि रायो ए माय । नाभि रायकुल चंदलो, एतो मरुदेवी कुखे जायो ए माय. आदि ॥१॥ नगरी विनितानो धणी, एतो आदीश्वर सुखकारी

ए माय । अष्टापदे सुगते गया, एतो भरि[illegible] राज कुंवारी ए माय आदि. ॥२॥ प्रभु दरसण [illegible] थास्ये एतो, भवि सारग उल्हासे ए [illegible] । दरसण विन किरिया सहु एतो, शिव साधन नाहे थाये ए माय आदि. ॥३॥ सजि सिणगार मनोहर एतो, गोरी मंगलगावे हे मा० द्रव्यभाव [illegible] राजनी एतो पूजाकरी सुख पावे हे मा० आ० ॥४॥ वसु दिन उछव रंगसुएतो दिन दिन संघ जवाये एमाय । पंचम अंग पूरण करी एतो, कृपाचंद्र गुण गायो ए माय आदि ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीआदिश्वरजिन स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीनुं स्तवन प्रारंभ ॥

राग-देशी—जीवन म्हारा तेवीसमा जिणचंद, वामानंदन भेटयारे सायावा म्हारा भावसुरे म्हारा राज जीवन । अश्वसेन कुलचंद, पाप करम सहु मेटयारे सायवा अनादिनारे म्हा. ॥१॥ जी. मूरत मोहन वेल, नीलवरण तनु छाजेरे सा. सोहामणीरे म्हा. जी. मुख छवि अगम अपार, पूनम निशि जिम राजेरे सा रजनी कम्रे म्हा. ॥२॥ जी. नयनअमीरस रेल, कामणगारा प्यारारे सा. म्हारा, मन हरेरे म्हा. जी. भाल विशाल रसाल, अष्टमी सशि सुखकारारे सा. मन्ध चकोरनेरे म्हा. ॥ ३ ॥ जी. चिंतामणि

प्रभुपास लोद्रवपुरमें विराजैरे सा. सुख करुरे म्हा. जी सहस्रफणा महाराज दरिसण वांछित काजैरे सा. दुःखहरुरे म्हा. ॥ ४ ॥ जी. संघ मिल्यो बहु थाट हे जै घणे गह गाटेरे सा. हरखसुंरे म्हा. जी, अष्टदिवस उछरंग रथयात्रा बहु रंगैरे सा. उमंगसुंरे म्हा. ॥ ५ ॥ जी० दीठो तुम्ह दीदार हिव प्रभु मुजनै तारोरे सा. हित धरीरे म्हा. जी. तुससम अवरनदेव दीठो नहीं सुखकारोरे सा. जगतमांरे म्हा. ॥ ६ ॥ जी. तुम पद पंकजसेव भवभव मुजने मिलज्योरे सा. सुहंकरुरे म्हा. जी. एहीज सुणी अरदास वांछित पूरणकरज्योरे सा. कृपाकरीरे म्हा. ॥ ७ ॥ जी.

॥इति श्रीपार्श्वनाथस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीभद्रेशरजी स्तवन प्रारंभ ॥

वीर जिनेसर सांभलोरे लाल. सेवकनी अरदास सुखकारीरे; तारक विरुद सुहामणोरे लाल. सुणि आयो तुम पास उपगारीरे ॥ वीर. ॥ १ ॥ साहिब सुनिजरकीजियैरे लाल. मुजपर गरिब निवाज ॥ सुख ॥ मनमोहन महिमा निलोरे ॥ लाल ॥ तुम सेवा सुख काज ॥ उ ॥ वी. ॥ २ ॥

काल अनादि लगे भम्योरे ॥ लाल ॥ भव अटवी विषम अगाध ॥ सुख ॥ क्रोधादिक श्वापद जिहांरे ॥ ला ॥ प्रतिप्राणिने दे बाध ॥ उ ॥ वी. ॥ ३ ॥ इंद्रिय विषय कंटक तिहांरे ॥ ला ॥ दुर्धर शालसमान ॥ सु ॥ चउगइ मारग चालतांरे ॥ ला ॥ मोह करे हेरान ॥ उ ॥ वी. ॥ ४ ॥ काल आहेडी केडे पड्योरे ॥ ला ॥ छलताके निशदीश ॥ सुख ॥ ए आपदथी उद्धारोरे ॥ लाल ॥

तुमे मोटा जगदीश ॥ उ ॥ वीर. ॥ ५ ॥ भद्रेसर भले भावसुंरे ॥लाल॥ भेटया श्रीभगवत ॥सुख॥ तेवीसम जिन सुख करुरे ॥ लाल ॥ महिमावंत महंत उ॥ वी ॥ ६ ॥ बावन देहरीमां दीपतारे ॥लाल॥ मनोहर श्रीजिनराज ॥ सुख ॥ अदभुत दीठो देहरोरे ॥ला॥ मानु नवीन रच्यो आज ॥ उ ॥ वीर ॥७॥ दंडकलस सोहे सदारे ॥ लाल ॥ धजा पताका लहकंत ॥ सुख ॥ मांडणी जोतां एहनीरे ॥ लाल ॥ भवि मनमां हरखत ॥ उ ॥ वी. ॥ ८ ॥ पूरव पुन्यथी पामीयोरे ॥ लाल ॥ अनुपम जिन सुखचंद ॥ सु ॥ कच्छमंडन श्रीजगधणीरे ॥ लाल ॥ वंदे नित कृपाचंद ॥ उ वी ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीभद्रेश्वरजी स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ महावीरजिन स्तवनं ॥

राग साख-महावीर जिनराज आज सखिरे- होतो नहीं, ऐसो तो नहीं रे भविक जन ऐसो तो नहीं. अवश्य संचित पाप करम सहु लेतो सही महा. ॥१॥ ए आं. । अद्भुत मोहनी मूरति देखत सुमति लही. आतम वस्तु स्वभाव प्रकाशक दिनकर नीपही. म. ॥२॥ काल अनादि पुद्गल संगे परपरणतिमां रही, प्रभु आलंबन पूर्ण पामी निजगुण ज्ञानमही । महा. ॥३॥ हरख दुःख वदय मयी सजनी सुखानंद लही. शुद्धानंद अनुभव आस्वादी कृपाचंद्र ग्रही महा. ॥४॥

इति संपूर्णम्

॥ श्रीभद्रेशरजीनुं स्तवनं ॥



राग काफी -आज प्रभु दरिसण पायो सुजमन हरखायो भद्रेसर पुर मंडण स्वामी चौवीसमा जिनरायो मनमोहन जिनमुद्रा निरखत दरसण सुं लय लायो आ. ॥१॥ तारणतरण बिरुद तुज सांभली हुं तुम चरणे आयो, मुनिजरथर ए सफल करीजे ज्युं मुज हरखसवायो.आ.॥२॥में भववासी तु सीववासी देव

निरंजन ध्यायो, भवभव भ्रमण थकी हुं हार्यो तिणतोरे मरणे आयो आ. ॥३॥ जिनप्रतिमा जिनवर समजाणो ए जिन वचन सुहायो, जैनशास्त्रनइ इण पेरे बोले तातें चित्त ठहरायो आ. ॥४॥ चन्द्रव्यानिधि शुभवरसे फाल्गुन सुदि मन भायो, द्वितीया जिनपद पंकजभेटे कृपाचन्द्र गुणगायो. आ. ॥५॥

इति सपूर्णम्

॥ अथ श्रीसिद्धगिरीनुं स्तवन प्रारंभ ॥

श्रीगिरिराज आज निहाले, कामित पूरण वांछित दाइ ॥ श्रीगिरि ॥ पूरण पुन्य उदय भयो सजनी, उज्जल गिरिकी यात्रा पाइ ॥श्रीगिरि ॥१॥ नाभिको नंदन जगत दिवाकर, इण तीरथ पर आये सवाइ; पूरव निवाणु श्रीजगदीसर, रायण तल निज पगला ठाइ ॥ श्रीगिरि ॥ २ ॥ महिमावंत महंतनिराइ, श्रीशत्रुंजय भेटो भाइ; श्रीमुनवीर जिनेसर भाखे, मोहमपति मन अधिक सुहाइ ॥ श्रीगिरि ॥३॥ सुरिमनेसर महिमावरणी, पंचम गणधर समनि लाइ, द्रव्य भाव विधि पूजन करियें; अष्ट सिद्धि नव निधि घर आइ ॥ श्रीगिरि ॥ ४ ॥ भेदवाण निधि चन्द्र संवच्छर, चैत्री पूनिम यात्रा

पाइ; फूलचंद संघ सहित जिन भेटें, कृपाचंद्र गिरि शिव सुखदाइ. ॥ श्रीगिरि ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीसिद्धगिरिनुं स्तवनं संपूर्णम् ॥

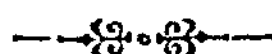
॥ आदिजीनेश्वरनु स्तवनं ॥



शुगण सनेही शाजन श्री सीमंधरस्वाम ए देशी. आदीश्वर अलवेसर जगपति श्रीजिनराज, अरज सुणि जे सुनिजर करी मुजपर महाराज; परमकृपाल कृपानिधि विरुद ए तुमचोराज, निशुणीने मुजमन अति हरष थयो शुभकाज. ॥१॥ जिनवर शाम दुजो नहि दीसे जगमे शेण, खिणखिणमें मुजमनमे सांभरे तुमतणावैण, अमीय रशीला कामणगारा सुशीलनैण निरखीने,चितडो नित ध्यावे तुम गुण लैण. ॥ २ ॥ मदमाता रंग राता निजनिज ताणे लोग, परमारथ जाणे नहि विना सदगुरु संयोग, गच्छकदाग्रह साचवे दृष्टि रागनो पोष, आतमगुण कषायता तेहनो करे ते शोष ॥३॥ दुशमकाल संयोगे आतम घणुं अकुलाय, पूरव पूरुषनो विरह पडयो ते केम खमाय, जहांजहां दृष्टि पशारी देखुं तहांतहां कोय, दीसे नहि तत्ववेदी जगमें विरला होय. ॥४॥ वीतराग विण दुजो

नहि इण जगमें देव, भवभव में मुजमिलज्यो तुम चरणांनी सेव, स्वारथ साधन शयण संबंधी सहुं संसार, परमारथ साधन निरख्यो मे प्रभु निरधार, ॥५॥ तुंमही ध्याता तुं पुरुपोतम शुद्ध प्रमाण, शिवपंथनो परुपक उत्तम ज्ञायक जाण, शिवसुखकारक शंकर अविन्याशी राजान, एह स्वरूप नहि जाणे मिथ्यामतेने मान ॥६॥ एहवा परमातमप्रभुनोदरिशन लह्योआज, हिव अनुमानथी जाणुं सीधा वंछित काज. तुं परमेश्वर परमपुरुप उपगारी सार, कृपाचंद्र जिन मुद्रा अनुपम सुखदातार ॥७॥

इति सपूर्णम



॥ अथ श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं प्रारंभ ॥

सुणसजनी गिरिराज देख मनमधुकर लीनोरे, आजमुज मनहर लीनोरे ॥ए आंकडी॥ श्रीसिद्धाचल शिखर मनोहर, प्रथम तीर्थपति रिपभ जिनेश्वर, समवसरया रायण तल प्रभु, त्रिभुवन जस लीनोरे ॥ सुण सजनी गिरि ॥ १ ॥ इंद्रादिक चउविह सुर मिलकर, समवसरण रचै भक्तिदिलधर, सिंहासन सोहै, जगतगुरू कल्पवृक्ष नगीनोरे ॥ सुण ॥ २ ॥ तीरथ महिमा प्रभुजी भाखै

पुंडरिक गणधर सूने ध्यावै, शत्रुंजय महात्म ग्रंथ रची, उपगारज कीनोरे ॥ सुणा ॥ ॥ ३ ॥ उज्वलगिरिनी यात्रा करतां, पुन्य भंडार प्रबल भांता मोहादिक शत्रु दूर करी, निजगुण थयो पीनोरे ॥ ४ ॥ सम्वतो गु निधिचन्द सोहे, दरसन कें मध्य मन मोहे, हरषचंद्र जिन संपूर्णे, यात्रा फल लीनोरे. ॥ सुण ॥ ५ ॥

॥ इति सिद्धाचलजी स्तवन संपूर्णन् ॥

अथ श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं प्रारम्भ ।

श्रीसिद्धाचल भेटोरे भविका अनुभव धर्म सहु भेटोरे श्री. पूरवनिवाणुं श्रीआदीश्वर गुण-गिरिवरपर आयारे । पुंडरीक पमुहा केईदिन सिद्धिवधूवश लायारे श्री. ॥ १ ॥ कार्तिपूनम पर्व कहीजे द्राविडवारिखिल्ल सीधारे । इम अनेक ए तीरथ फरसी मुक्तिलणा सुख लीधारे श्री. ॥ २ ॥ तीन भुवनमें तीरथ बहुला यात्राफल सम जाणोरे । नगरआ-मादि चैत्य जुहार्यां ए फल मनमां आणोरे श्री. ॥ ३ ॥ जिन कल्याण भूमी फरस्यां दशगुणो फल तुमे पामोरे । जंबुवृक्षनो चैत्यवंदीले शतगुणो फलसुखपा-मोरे श्री । ४ । धातकीखंडे पुष्करद्वीपे रुचक अंजनगिरि

कहियेरे जिनवदन न्हवणादि करतां सहसगुणोफल लहियैरे श्री ॥५॥ अष्टमनंदीसरना जिनालय कुंडल चैत्यवंदोरे। इणथी दशगुणोफलपामीजै मानुषोत्तर चिरनंदोरे श्री ॥६॥ वैभारागिरिपञ्चीरजिनेसर समेतशिखराजिन वीसरे। वैताढ्यनेवलीमेरुशिखरना सास्वताचैत्यजगीशरे श्री.॥७॥ गिरनारमंडननेमीजिनेसर अष्टापद चोवीशरे। कोटिगुणो फलपदूनो क्रमथी वंदो विसवावीशरे श्री.॥८॥ एहथी शत्रुजयगिरि भेट्यां अनंतगुणो फल जाणोरे। ए कारणथीभवियण भावें यात्राकरणमनआणोरे श्री. ॥९॥ छहरीपाली जे नर भेटे ते ए शुभ फल पावेरे। कुमतीकदाग्रहदूरनिवारी निजआतमघरआवेरे श्री ॥१०॥ उगणीसेपांसठफागणसुदि बीजदीवसप्रभु वंदेरे। नाथावजपालसंघसहितशुभ कृपाचन्द्रचिरनंदेरे श्री ॥११॥

॥ इति सिद्धाचलजी स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीचिंतामणीपासजी स्तवनं प्रारंभ

श्रीचिंतामणीपासजीरे लोद्रवपुर राजान। दरसण वहिलो दीजियैरे सिवमंदिर सोपान,

जिनेसर सुणिये ए अरदास ॥ १ ॥ सुखसंपति कारक सदारे प्रभुइण जगमें देव । सुरनर पति त्रिहुं कालमैरे सारे तुमतणी सेव ॥ जि. सु. ॥ २ ॥ वामानंदन जगधणीरे तेवीसमो जिनचंद । नील-वरण सुहंकरूरे अदभुत ज्योतिदिणंद ॥ जि. सु. ॥ ३ ॥ ऋषभ अजित संभव नमुंरे सहसफणाजि-नराय । समवसरण चोवीसनोरे कल्पवृक्ष रह्यो छाय जि. सु. ॥ ४ ॥ आसधरीने आवीयोरे विषम उलंघी घाट । प्रभुपद पंकज भेटीयारे संघसहित गहगाट जि. सु. ॥ ५ ॥ तारकतारो तातजीरे विरुद एह दिलधार । कृपाचंद्र अलवेशरूरे निश्रेय-सदातार ॥ जिने ॥ सु. ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीचिंतामणीपासजी स्तवनं संपूर्णम् ॥

अथ श्रीअयवंतीपासजी स्तवनं प्रारंभ

श्रीअयवंतीपासजीरे तेवीसमा जिनचंद । दरससरसमुजदीजियेर सिवसुखतरूनो कंद । जिणेसर दीजे दरिसन सुद्ध॥१॥ दुविध दरिसन जिनवर कह्योरे सुद्धासुद्ध विचार। सुद्ध दरिसणथी संपजेरे निश्चयसुचिव्यवहार जि. दी. ॥२॥ तुम सारिखा साहेब छतारे अवरतणीसी आस। कल्प

वृक्ष पामी करीरे कुण करे बांवल वास।जि दी. ३
उगणीसै अडतालीसमेरे जेष्ठ धवलबुधवार। दसमी
दिनप्रभु भेटीयारे कृपाचद्र सुखकार जि दी. ४

॥ इति श्रीअयवतीपासजी स्तवन सपूर्णम ॥

॥ अथ श्रीचिंतामणीपासजी स्तवनं प्रारंभ ॥

सांती प्रभु वीनती एक मोरीरे ए देशी. चिंतामणी वीनती अवधारोरे सेवकना वांछितसारो.. चिं. प्रभुनामसुणीने आयोरे मुजमनमां हरख सवायोरे, दरसण देखी सुख पायो ॥ चिं. ॥ १ ॥ प्रभु त्रो त्रिभुवनना स्वामीरे मुज आतमना विसरामीरे तुम सेवा पुन्ये पामी ॥ चि. ॥ २ ॥ पूरव सुकृत मुज फलियारे भवभंजन प्रभुजी मलियारे, दुःख दोहग सगलाटलिया ॥ चि. ॥ ३ ॥ घणी विषम उलंघी वाटरे पर्वतनदीयानाथाटरे, भेट्या संघसहित गहगाट ॥ चि. ॥ ४ ॥ कच्छ मांडवी नगर सुहावेरे नाथोवजपालकहावेरे, जिण जात्रा करावी भावै ॥ चि. ॥ ५ ॥ उगणीसै पासठ वरसेरे सुदिमाघमासमनहरखेरे, चोथदिवसचरण

प्रभु फरसे ॥ चिं. ॥ ६ ॥ प्रभुमुख पूनिमनो चंदरे दीठा मुज आनंद अमंदरे, नितनतिप्रणमें कृपाचंद्र ॥ चिं. ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीचिंतामणीपासजी स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीमगसीपार्श्वनाथ स्तवनं प्रारंभ ॥

श्रीमगसी पार्श्वसुखकारं भविहृदिकमलबोधन-दिनकारं ।श्री म। मालवमंडल शोभावधारं प्रभुदर-सण वरसै जलधारं ॥श्री॥ म. ॥१॥ नीलवरण शुभ-द्युतिललुहारं कर्मकलुपनल दूर निवारं। ध्याताजन मनमोहनहारं बोधबीजगुणमणिदातारं श्री. म. २ कमठमहाशठमान विडारं उरगअनुकंपा करी सुवि-चारं। वासवसेवितक्रमयुगलुसारं पद्मावती करे नृत्य उदारं ॥ श्री. म. ३ तुं परमेश्वरपरमाधारं परमजोति-चिद्रूप अविकारं। सुरगुरुरसना सहस्रकरैवारं तोहीनआवैतुजगुणपारं ॥श्री. म. ॥४॥ धन्यदिवस आये हरखअपारं पुन्यप्रबलप्रभुदीठो दीदारं। जिनवचनामृतयुक्तिसुसारं कृपाचंद्रपदकज मधु-कारं ॥ श्री ॥ म ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमगसीपार्श्वनाथ स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीमहावीर जिनेश्वर स्तवनं प्रारंभ ॥

हांरेम्हांरे वीरजिणंद सुंलागो नवलो नेहजो। प्रीतडली बखाणीरे अमीरस लोयणेरे लोय॥ आंकणी. हांरेमारेप्रभुजीरो मुखडो सोहे सारद-चद्जो। मुजमनडो लोभाणो चकोर जिम जोयणेरे लोय॥ १॥ हांरेमारे त्रिभुवन नायकलायक श्री भगवतजो त्रिसलानंदनवदन लिसुणोवीनतीरे लोय॥ हांरेमारे भवभव भटकत आयो छु तुम तीरजो। हिव सेवकने तारो प्रभु कहिये कतिरे लोय॥ २॥ हांरेमारे आगल पिण तुम तारया जननावृदजो। अपराधि छतां साहिब तेउने उद्धर्यरे लोय॥ हांरेमारे साहिबसुनिजर करी मुज जाणो ग्वासजो। तुमबाट मेदेव अवरन परिहरयारे लोय॥ ३॥ हांरेमारे भवसरमां भेटया श्रीभगवानजो। देरान्तर सुखकारी दीठो मनहररे लोय॥ हांरेमारे उगणसिवामटे फागुण मासजो। कृपाचद्र जिनपदरूज प्रणम्या सुखकररे लोय॥ ४॥

॥ इति श्रीमहावीरजिनेश्वर स्तवन संपूर्णम्॥

॥अथ श्रीआदिजिनेश्वर स्तवनं प्रारंभ॥



राग खंभात–आदिजिणंदा मुखअनुपमचंदा आदि० मोह्या सहु सुरनर मुनिइंदा ॥ आदि ॥ आंकडी ॥ नित्योदय एहनो यथाछंदा । मोहांधकारकुं दूर करिंदा ॥ आदि ॥ १ ॥ एहने राहु ग्रहै नहीं मंदा । आच्छादन न करे वारिंदा ॥ आदि ॥ २ ॥ अद्भुत एहनी कांति सोहंदा । एह अपूर्व शशांक कहिंदा ॥ आदि ॥३॥ अनुभव अमृतवरसत चंदा । भविक कुमुद मिलपान करिंदा ॥ आदि ॥४॥ हरख अधिक आज उदयोदिणंदा । कृपाचंद प्रभु चरणुंदा वंदा ॥ आदि ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीआदिजिनेश्वर स्तवन संपूर्णम् ॥

।अथ श्रीरिषभजिनेश्वर स्तवनं प्रारंभ।



रिषभजिन म्हारे तुमसुं प्रीत प्रीतबनीबहुरीत॥रि॥ म्हा ॥आंकडी॥ सुगणसनेही साहिबोजी शेत्रुंजगिरि सिणगार । खिणखिणमे मुजसांभरेजी सुंदरतुम दीदार ॥ रि ॥ १ ॥ वदनकमल मानुंचंदलोजी कामणगारा जोर। नयनतुमारा तीखडाजी चितडो-लीनो चोर ॥ रि ॥ २ ॥ तारक विरुद ए तुमतणोजी

सुणि आयो तुम पास । सुनिजर सफलो करोजी मुरोमनडेरी आस ॥ रि ॥ ३ ॥ दीपसिखाजिमनाशिकाजी अष्टमिशशिसमभाल । गिणति कहोकुण करी शकेजी तुम गुणगणनीमाल ॥ रि ॥ ॥ ४ ॥ यात्रा रीसहुरगसुंजी प्रगट्यो हरख अपार । सघसहित प्रभुभेटिआजी कृपाचंद्र सुखकार ॥ रि ॥५॥

॥ इति श्रीरिखभजिनेश्वर स्तवन संपूर्णम् ॥

॥अथ श्री आदिजिनेश्वर स्तवनं प्रारंभ॥

आदीस्वर अवधारो अरजी अमतणी हो राजके अरजी अमतणी ॥ ए ॥ आंकणी ॥ सुनिजर घर प्रभुसेवा आपो तुमतणी हो राजके, आपो तुमतणी भवभवभ्रमण करतां विपतसही घणी हो राजके, विपत सही घणी, सुगुरुपसाये प्रभु मिलिया अमनेघणी हो राजके, मिलिया अमने घणी ॥ १ ॥ रागद्वेष दोष शत्रु मुजकेडे पड्या हो राजके, मुज केडे पड्या मोह भूपनी प्रबल आणा लेइ नड्या हो राजके, आणा लेइ नड्या प्रभुजीनो सुपसाय पामीने आथड्या हो राजके, पामीने आथड्या आतमगुणनी पुष्टीना कारण अड्या हो राजके, पुष्टीना कारण अड्या ॥ २ ॥ दीठो तुम दीदार

साहिब योनिज गुण निरधारी ध० ॥ ३ ॥ रागद्वेष भुजकेड पाडिया । देत महा दुख भारी वीतराग प्रभु नाम धरावो ताते करिये पुकारी ध० ॥ ४ ॥ सुखसंपतिकारक भववारक सेवकजननिस्तारी समवसरणमे चौमुख जिनवर कृपाचंद्र सुखकारी ध० ॥ ५ ॥

इति पदम्.

"भवियां भाव धरीने भेटो भगवानने रे, प्रभुजी तारे सारे वंछित देव रसीया धर्म-जीनेसर गुणगावो रंगसुरे एनी सुरनर पति करे सेव भ. ॥ १ ॥ पनरम जीनवर सेविये धर्म धुरंधर स्वाम धर्मनाथ जीनराजजी पुरे वंछित काम गोडी पारसनाथ प्रणमो सोहामणा रे एतो बीजी भूमीबिंब विशेष भ. ॥ २ ॥ नेमीजीनेसर वालहो ब्रह्मचारि सिरदार श्याम वरण छवि सुंदर भविजनने सुखकार प्रभुनो परचो चिहुं दिशि परगडो रे वलि बारमा वासु-पूजजाण भ. ॥ ३ ॥ शांतिजीनेसर सोलमा शांति-तणा करनार नेमनाथ चवरी भली संभव चोमु-खसार एतो देरासर दीठा दोय सोहामणा रे दीपे बावन देहरा विशाल भ. ॥ ४ ॥ बारम जीने-वर सेविये वासुपूज महाराज बीजो देहरो

शांतिनाथनो मानु नवीन रचो आज।
आदीसरनो दीठो अदभुत देहरोरे वली चन्द्राप्रभु
चैत्य नवीन (न० ॥५॥ अजित जिनंद जुहारिये
अलिविघन सहुजाय मुनिसुव्रत जिन वीसमा
दादा देहरी कहाय वंडे माहे प्रथम जिनं
भेटीयारे एतो चैत्य प्रवाडी उछरंग भ. ॥६॥
समवसरणमे शोभता चौमुख श्रीजिनचन्द
भविजनना मन मोहता सेवे सुरनर इंद जामगन-
रमां उछरंग वधामणारे हरखे मिलिने नरनारि
गुण गाय. भ. ॥ ७ ॥ भगवती भावे सांभली
उपधान वलोचितचद" फत्तुर परमुख भविकजन
पहर्गी माल मनरंग देश विदेशना आवे बहु
जातरीरे वरत्यो कृपाचन्द आनन्द जय जयकार.
भ. ॥८॥ इति पद.

सज्झाय लिख्यते ॥

क्रोध मकरसो भोला प्राणियारे। क्रोधथी
थाये कोड कलेसरे। आधि व्याधि वधे घणीरे।
धर्मनो रहे नहिं लव लेसरे ॥ १ ॥ बहुकाले जे तप
जप जादरे रे। क्रोधथी खिणमां खेर थायरे। कु-
णाला नगरीना मुनि जाणिये रे। क्रोधथी दूरग-
तिमां ते जायरे ॥ २ ॥ क्षण क्षणमां जे क्रोध करे

मुनिरे । पाप श्रवण ते कहिवायरे । शिष्यना ऊपर क्रोध करी थयोरे । चंडकोशियो कह्यो जिनरायरे ॥ ३ ॥ पोतानो आत्मगुण वाले सहिरे । पछे परनो घर बालंतरे । अग्नि समान जाणो तुम क्रोधनेरे । जे त्यागे ते मोटा कहंतरे ॥४॥ अनंतानुबंध्यादिक चउ भेदथीरे । ते लहे दरशन आदि समृद्धिरे । सूरिकृपाचंद कहे धारज्योरे । क्षमाथी पामे अविचल रिद्धिरे ।

इति संपूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय कषाय लिख्यते ॥



मानव भव पामी करी जी । विनय करो निशिदीस । मान महा गज टालवाजी । भाखे श्री जगदीस । चतुर नर मेलो माननी वात । जिम थाय सुख सात । च० मे० ॥ १ ॥ मोह महाराजा तणो जी । मान ए अंगज जाण । जाति मदादिक एहना जी । परिकर जाणो सुजाण ॥ च० मे० ॥ २ ॥ मान तणे वस जे पड्या जी । तेह रझड्या संसार । मान त्यागथी बाहूबली जी । पायो केवल सार ॥ च० ॥ मे० ॥ ३ ॥ विनयथी विद्या संपजे जी । समकित लहे सुखकार । चरित्र पाले निरमलो

जी । पोहचे मुक्ति मझार ॥ च० ॥ मे० ॥ ४ ॥ रावण राज गमावीयो जी । दुर्योधन दुख लीन । प्रतिविष्णु नरके गयाजी । मानगी संगति कीन ॥ च० ॥ मे० ॥ ५ ॥ विनय मूल जिन धर्मनो जी । आख्यो श्रीजिनराज सूरि कृपाचंद्र गुणलत्तवेजी । विनय जाणो सिरताज ॥ च० ॥ मे० ॥ ६ ॥

इति मानसज्झाय ॥

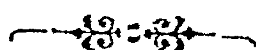
॥ अथ मायानी सझाय लिख्यते ॥



॥ माया वीषवेली । २ । एतो दे दुरगतिमां ठेली । माया विषवेली० ॥ ए आंकडी ॥ माया वेलडी मनमां उगी । आर्यरक्षीले उखेली ॥ १ ॥ मायावि० ॥ मायाकाया जगमें झूठी ममता मांहिं कहेली ॥ २ ॥ माया० ॥ कपट दपट करि लोकने धूते । बहु रूपे भर मेली ॥ माया० ॥ ३ ॥ आषाढ भूति ने माया मूंकी । लही शिव पदनी सेली ॥ माया० ॥ ४ ॥ मल्लि जिनेश्वर पूर्व भवमें मित्रथी माया करेली ॥ माया० ॥ ५ ॥ स्त्रीतीर्थंकर पाम्या तेहथी । उत्तम गुण गण मेली ॥ माया० ॥ ६ ॥ धूतारा बहु माया करके धुते जग जन हेली ॥ माया० ॥ ७ ॥ माया त्याग करो गुरु संगे ।

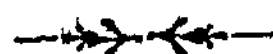
कृपाचंद्र सुख सेली ॥ माया० ॥८॥ इति मायानी सज्झाय ॥

॥ अथ लोभनी सझाय लिख्यते ॥



॥ राग भरतरि ॥ लोभ तजो भवि प्राणिया लोभे सब गुण जावे लोभे सुख नवि हूवे काा तो किम निज गुण पावे ॥ लो० ॥ १ ॥ सागर सेठ बहु लोभीयो नरक गयो निरधार मम्मण तिम बहुलाजन थया दुरगतिना भरतार ॥ लो० ॥ २ ॥ सुभूम चक्री साधन भणी लोभ पिशाच ग्रहाणो सप्त समुद्रमां बूडीयो थयो नरकनो राणो ॥ लो० ॥ ३ ॥ सूक्ष्म लोभ जिहां लगे शिव सुख अभिलाषा लोभ शत्रु दूरे करी केवलज्ञान प्रकाशा ॥ लो० ॥ ४ ॥ च्यार भेद लोभना कह्या जिणगणधर देव तेहनजी लहे काम थकी निज गुणने सेव ॥ लो० ॥ ५ ॥ च्यार कषाय निवारवा कषाय गंजण तप कीजे कृपाचंद्रसूरि इम भणे वंछित फल लीजे ॥ लो० ॥ ६ ॥ इति लोभ सज्झाय ॥

॥ अथ दीवालिनी सझाय लिख्यते ॥



॥ हांरे मारे ठाम धर्मना साढा पचवीश देश जो ॥ ए देशी ॥ हांरे मारे दीवालि दिन आव्यो सजनी जाणजो । वीरजिनेश्वर अंतिम चउमासी ख्यार लो ॥ १ ॥ हांरे मारे पावापुरीमां वसीया त्रिभुवन नाथ जो । सोलि पहर लगे देशना दीधी सुखकलो लो ॥ २ ॥ हांरे मारे पुन्यपालराजा पूछे सुहणानो अर्थ जो । भाखो फलकह्यो पंचम आरानो महीरे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे गौतम स्वामीने मुक्या बोधन काज जो । अमावसनी रजनी ये प्रभुनिव-वर्यारे लो ॥ ४ ॥ हारे मारे चोसठ सुरपति आव्या ततखिणनामजो । कल्याणक निर्वाणनो उच्छव सोकसु रे लो ॥ ५ ॥ हांरे मारे पाछावलता गौतम जाण्यो निर्वाणजो । वज्राहत परे मुर्छित थई जागृत थयारे लो ॥ ६ ॥ हांरे मारे विविध विलापकरे श्रीगौतम स्वामी जो । वीतराग थई केवललब्धि पामीयारे लो ॥ ७ ॥ हांरे मारे काशी कोसल देश गणागणराय जो । अढार मिलि पोसह विविशुं आदर्यारे लो ॥ ८ ॥ हांरे मारे भाव उद्योत गयां थकां द्रव्य उद्योत जो । रयण मुकीने दीवालि करी निज समेरे लो ॥ ९ ॥ हांरे

मारे गौतम केवल महिमा करे इंद्रजो । भाइ बीज जमाडयो बेह्नी घे भाइने रे लो ॥ १० ॥ हांरे मारे दीवालि नो छठकरी चौविहारजो । सोल पहोरनो पोसहतप आराधियेरे लो ॥ ११ ॥ हांरे मारे गुणनो करी परभाते मंगल काजजो । गौतम स्वामीसुं एकासणो करे भावशुं रे लो ॥ १२ ॥ दीवाली पर्व लोकोत्तर लोकीकजो । परसिध थयो कारतिकवदि अमावसे रे लो ॥ १३ ॥ हांरे मारे पर्वाराधन करो भवि मनउछरंग जो । जिनकृपाचंद्रसूरि कहे सुख संपति वरोरे लो ॥ १४ ॥ हांरे मारे० ॥ इति दीवाली सज्झाय ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥



॥ द्विविध धर्म जिनवर कह्यो । साधु श्रावकनो जाण । शिक्षा दोय सेवो सदा । ग्रहणा सेवन आण ॥ १ ॥ धर्म शुक्ल दुग ध्यान ने ध्यावो चतुर सुजाण । आर्त्त रौद्र दोय परिहरो । त्रिकरण शुद्धि महिरान ॥ २ ॥ अभिनंदन जनम्या प्रभु । सुमति अर चवियां । वासु पूज्य थया केवली । शीतल शिव सुख वरिया ॥ ३ ॥ सीमंधर युगमंधरा । वीस विहर मान होय । राग द्वेषनो त्याग करी ।

निश्चय व्यवहार जोय ॥ ४ ॥ बीज दिवस आराधिये ए । ज्ञान तिथी सुविहाण । सूरिकृपाचंद्र सेवतां । तपथी कोड कल्याण ॥ ५ ॥

॥ इति बीजतिथीनो चैत्य वंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपंचमी चैत्यवंदन ॥

॥ पांच ज्ञान प्रगटायवा । पंचमी तप सुप्रधान । आराधो भवि इकमने । प्रगटे ज्ञान निधान ॥ १ ॥ अवग्रहादिक जाणिये मति अठावीश सार चउद वीश भेद श्रुततणा । अवधि ज असंख्य प्रकार ॥ २ ॥ मनःपर्यव दुग भेद छे । केवल सकल प्रकाश । लोकालोक स्वरूपनो । ज्ञायक ज्ञान ए खास ॥ ३ ॥ सर्वाराधक ज्ञानने । भाख्यो श्री जगदीश । सामोरवासमां कर्मनो क्षयकरे विशवावीश ॥ ४ ॥ लघु मध्यम उत्कृष्ट पंच । मास वरिस जावजीव । विधि पूर्वक आराधतां । पामे ज्ञानसदीव ॥ ५ ॥ देशपरोक्ष प्रत्यक्षतान । श्रुत उपगारी जाण । सूरिकृपाचन्द्र प्रणमतां लहियें निर्मल नाण ॥ ६ ॥ इति पंचमी चैत्यवदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री पंचमांथुइ लिख्यते ॥

॥ श्रीनेमिः पंचरूपत्रिदशपतिकृतप्राज्यजन्माभिषेकः । चंचत्पंचाक्षमत्तद्विरदमदभिदा पंचवक्त्रोपमानः । निर्मुक्त पंचदेहाः परमसुखमयप्रास्तकर्म प्रपंचः । कल्याणं पंचमी सत्तपसि वितनुतां पंचम ज्ञानवान् वः ॥ १ ॥ संप्रीणन् सच्चकोरान शिवतिलक समः कौशिकानंदमूर्त्तिः । पुण्याब्धि प्रीतिदायी सितरुचिरिव यः स्वीयगोभिस्तमांसि सांद्राणि ध्वंसमानः सकल कुवलयोल्लास मुच्चैश्चकार । ज्ञानं पुष्यात्जिनौघः सततपसि भावनां पंचमीवासरस्य ॥ २ ॥ पीत्वा नानाभिधार्थी मृतरसमसमं यांति यास्यंति जग्मुः । जीवा यस्मादनेके विधि वदमरतां प्राज्यनिर्वाण पुर्यांम् । यात्वा देवाधिदेवागमदशम सुधा कुंभ मानंद हेतु । स्तत्पंचम्या स्तपस्युद्यत विशदधियां भवीनामस्तु नित्यं ॥ ३ ॥ स्वणालंकार वल्गन्नाणि किरण गणध्वस्त नित्यांधकारा । हुंकारा रावदूरी कृत सुकृत जनव्रातविघ्न प्रचारा । देवी श्री अंबिकाख्या जिनवर चरणांभोज भृंगी समाना । पंचम्यन्ह स्तपोर्थे वितरतु कुशलं धीमतां सावधान ॥ ४ ॥

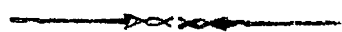
॥ इति थुइ संपूर्णम् ॥

॥अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन लिख्यते॥

॥आठमदिन आराधिये। प्रवचन माता सार।
अष्टमिद्धि आपे सदा। कापे कुमति कुठार ॥ १ ॥
आठमद निवारिने। अष्टकर्म करि अंत। श्रावण
सुदि आठम दिने। पासजी लह्या भव अंत ॥२॥
भादरवा वदि आठमे। सुपास चव्या जग भाण।
माघ सुदि जनम्या अजित फागन संभव चव्यां
जाण ॥ ३ ॥ चैतर वदि आठम रिषभ। जन्म
दीक्षा बे जाण। वैसाखसित अष्टमी। अभिनंदन
निर्वाण ॥ ४ ॥ एहिज तिथी जनम्या सुमति। जेठ
वदि मुनिःसुव्रत। आषाढ सुदि आठमे। नेमि
जिनेसर निर्वृत ॥ ५ ॥ श्रावण वदि आठम दिने।
नमि जनम्या जिन जाण। पोसह करो आठपहेरनो।
जिम लहो गुण मणि खाण ॥ ६ ॥ अष्टमी इम
आराधिये। त्रिकरण करि इकठोर। कृपाचंद्रसूरि
भवितणा। तूंटे कर्म कठोर ॥ ७ ॥

॥ इति अष्टमी चैत्यवंदन ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥



॥ श्रीमल्लि त्रिभुवन धणी । जन्म दीक्षाने ज्ञान । कल्याणकएकादशी । मगसर शुदि मन आण ॥ १ ॥ अर पारस दीक्षाग्रही । एकादशी दिन जाण । रिषभ अजित सुमति नमि पामे केवलज्ञान ॥ २ ॥ पद्मप्रभु सिवपुर लह्यो । एकादशी अतिरूडी । इग्यारे अंग आराधवा । ए तिथी नहीं कूडी ॥ ३ ॥ इग्यारे गणधर थया । द्वादशअंगरचनार । कृपाचंद्रसूरि सेवतां । पामे भवनो पार ॥ ४ ॥ इति एकादशी चैत्यवंदनं ।

॥ अथ १० शीतलजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥



॥ शीतल जिनपति जगतिलो । सांति सुधा-रस सार । अंतर ताप बुझायवा । प्रभु दरसण जलधार ॥ १ ॥ सुग्रीव कुलनभ दिनमणि । नंदा मात सुजात । तीन भुवन तारण तरण । प्रभुजी छो विख्यात ॥ २ ॥ अंतर वैरी नमायवा । नमि सेवो जगदीश । पारस फरसन तें हुवे । पावन

विमया धीश ॥ ३ ॥ उगणीसे तेहोत्तरे बुहारी थाप्या ईश । प्रभुपद पकजमां नमें ॥ कृपाचद्र सूरीश ॥ ४ ॥ इति १० शीतल जिन चैत्यवंदन ॥

॥ अथ १२ वासु पुज्य जिन चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ बारम जिनवर वदिये । वासु पूज्य जिन-चन्द । रक्तवरण द्युति सुंदरू । मोहे सुर नर इंद ॥ १ ॥ सित्तर धनुपनी देहडी लाख बहुत्तर आय । त्रिकरण जोगे आराधतां । निजगुण निर्मल थाय ॥ २ ॥ देरासर भलो दीपतो ए ॥ बुहारी नगर मज्झार । सूरिकृपाचद्र सेवतां । पामे जग जयकार ॥ ३ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन चैत्यवदन सपूर्ण ॥

॥ अथ पर्युषण पर्वनो चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ श्रीवीरजिनेसर भाखियो पर्वोमां सिरदार । रत्नोमां चिंतामणि । गिरिमां शत्रुंजय सार॥ १ ॥ लौकिक लोकोत्तर वलि । पर्व घणा दिल धार । पजुषण सम को नहीं । बोल्या शास्त्र मझार ॥२॥

नंदीसर दीपे जइ। उच्छव करे सुर राज। तिम श्रावक आराधतां। सारे वांछित काज ॥ ३ ॥ आस्रव कषाय निवारिने। सामायक करी शुद्ध। जिन पूजा पर भावना। करिने तरो भव बुद्ध ॥ ४ ॥ कल्पसूत्र सुणो इक मना। संवच्छरी पडिक्कमिये कृपाचंद्रसूरि सेवतां भवमां नांव भमिये ॥ ५ ॥ इति श्रीपज्जुषण पर्वनो चैत्य वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री दीपमालिका चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ जय जय श्री जिनवर्द्धमान। सोवन समवान। सिंह लंछन सिद्धार्थराय त्रिशला सुत भान ॥ १ ॥ वरस बहुत्तर आउ देह कर सत्त प्रमाण। रिषभादिक सम जास वंस। इक्ष्वाग सम जाण ॥ २ ॥ छठ भत्त संजम लियोए। कुंडग्राम पुर ठाम। गणधर इग्यारे सहित। पायो शिव पुर स्वाम ॥ ३ ॥ चवद सहस मुनि स्वामी सीस। छत्तीस सहस। श्रमणी श्रावक एक लाख। गुण सठ्सहस ॥ ४ ॥ तीन लाख श्राविका वली। सहस अढार। सुर मातंग सिद्धायिका। नित सानिधकार ॥ ५ ॥ एकाकी पावा पुरीए। छठ

भक्त सुजाण । प्रभु पोहता अमृतपदे । करो सघं कल्याण ॥६॥ इति श्रीदीपमालिका चैत्यवदन ॥

॥ अथ द्वितीयदीवालीनो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ सिद्धार्थ कुल दिनमणि । त्रिसलानो जायो। अतिम चोमासी प्रभु । पावा पुरी आयो ॥ १ ॥ कातिवदि अमावसे। सोल पहोर परसिद्ध। देशना दीधी वीर जिन । अनुपम सिव सुख लीद्ध ॥ २ ॥ गौतम स्वामीने ऊपनो । केवल ज्ञान उदार । दीवाली परभातमां । सहु भवने सुखकार ॥ ३ ॥ भाइ बीजनो पर्व थयो । सोक निवारण काज । दीवाली आराधतां सारे वछित काज ॥ ४ ॥ छठ करि गुणनो करो । चाढो नैवेद्सार । कृपाचंद्रसूरि सेवतां । पामे भवनोपार ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीदीवालीचैत्यवदन सपूर्णम ॥

॥ अथ श्रीपजुषणपर्वनी थुइ लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर जग अलवेसर । राजग्रही समोसरिया जी, पर्व पजुषण इण परि भाखे । चउविह संघ परिवरिया जी, आषाढ चोमासाथी पचाश दिननी संख्या जाणो जी । संवछरी पडिकमणो करिने आतम निजघर आणो जी ॥१॥ दोय राता दोय धोला जिनपति । दोय काला दोय नीलाजी, लांछन वरण प्रमाण सुसोभित । सोले जिनवर पीलाजी । सतरे भेदी पूजा करिने । चैत्यपरवाडी करीजे जी । परवपजुषण पूरव पुन्ये । पाम्या लाभ जाणीजे जी ॥ २ ॥ कल्पसूत्र निज घर पधरावी । रात्रि जागो तिह कीजे जी । वरघोडो सजि संघ मलिने । सद्गुरुने आणी दीजे जी । नव इग्यारे तेरे वाचण । सुणिने दुरगति वारो जी । पूजा प्रभावना सद्गुरु भक्ति । करिने जन्म सुधारो जी ॥ ३ ॥ साहमीवच्छल करिये भावे । वारं वार उलसंता जी । केइ शीयल तप संयम पाले । भाव अधिक उलसंता जी । आठ दिवस पजुषण सेवो । जिम सेवे सुरइंदाजी । सुयदेवी सुपसाये भाखे जिन कृपाचंद सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्री पजुषण पर्वनी थुइ संपूर्ण ॥

अथ नवपदजीनो चैत्यवंदन लिः ॥

श्रीअरिहंत ना बार गुण सिद्धना आठ कहाय ॥ छत्तीश गुण सूरितणा । पचवीशकह्या उवज्झाय ॥ १ ॥ मुनिवरगुण सत्तावीस छै । दरशण सडसठ जोय । ज्ञान इकावन भेद छै । चारित्र सित्तर होय ॥ २ ॥ तप पचाश गुण जाणिये । नवपदना श्रीकार ॥ एकंदर सहु ध्याइये । त्रणसैछ यालीश सार ॥ ३ ॥ आंबिलकरि आराधिये । नव ओली सुजगीश । त्रिकरण योगेध्यावतां । जिनकृपाचंद्र सूरीश ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ नव पद वृद्ध स्तवन ॥

(दुहा) अरिहंतादिक पद तणो । ध्यान धरि मनमांहि सिद्ध चक्र गुणवरणवुं त्रिकरण धरिउछाहि ॥ १ ॥ राजग्रही नयरी भली । समवसर्या गणधार ॥ सिद्धचक्रगुण वरणव्या ते सुण जो अधिकार ॥ २ ॥ (ढाल पहली) जग जीवन जगवालहो ॥ एदेशी श्री गौतम गणेसरू । यभणे भावि सुखकारलालरे । श्रेणिक पमुहा सांभले । उत्तम धर्म विचार ला० श्री० ॥ ३ ॥

दुर्लभ मानुष्य भव लही । सेवो श्री जिन धर्म ला० दानादिक चउभेदथी । आराधिलहो शर्म ला० श्री० ॥४॥ भावविना जे दान छे । सिवसुख तेहथी न थाय ला० सीयल ते निष्फल लोकमां । भाव विना कहिवाय ला० श्री ॥५॥ भाव धीहुणो तपसही । भव वित्थारणहेतु ला० दानादिक भावे मिल्या । भव सायरना सेतु ला० श्री० ॥ ६ ॥ भाव मनो विषयिकह्यो सालंबन मन आण ला० आलंबन वहु जातिला । नवपदमनमा आण ला० श्री० ॥ ७ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज । उवज्झाय-साधुवखाण लालरे दर्शन ज्ञान चारित्रवलि तप ए नवपद जाण ला० श्री० ॥८॥ ढाल दूसरी ॥ भरतरीनी ॥ देशी ॥ नवपद ध्यावो भविजना । त्रिकरण कारिइकतारजी ॥ गौतमस्वामि उपदिसै श्रेणिकनरपतिसारजी ॥ न० ॥ ९ ॥ अठार दोष दूरे टल्या । केवल ज्ञान प्रकाशजी ॥ देवदानवपति प्रणमता । प्रगट करे तत्व खासजी न० ॥ १० ॥ एवा श्री अरिहंतने । ध्यावोचतुर सुजाणजी ॥ भाव सहित आराधतां । सिवसुखलहोमहिराणजी न० ॥ ११ ॥ पनरभेद प्रसिद्धछे । कर्म रहित सुखदायजी ॥ सिद्ध अनंत चतुष्कता । ध्यावो सिद्धलयलायजी न०॥१२॥ पंचाचारने पालता परउ-पगार प्रधानजी ॥ शुद्ध सिद्धांत वखाणता आचा-

रजश्रुतखानजी न० ॥१३॥ गणतृप्ति करता भला। सूत्र अर्थनादानजी। शिष्यादिकने आपता। नमोउवज्झायसुजानजी ॥ १४ ॥ कर्म भूमिमां विचरता। रत्नत्रयनाधारजी ॥ सुमति गुपति मुनिपालता। निकपाया सुविचारजी न० ॥ १५ ॥ जिन प्रणीत जेसास्त्रमां। तत्व सद्दहण स्वरूपजी दरशन रयण प्रदीपने। धारोचितमां अनूपजी न० ॥ १६ ॥ जीवादिक पदार्थनो। बोधस्वरूप विचारजी विनयकरि सीखोसदा। नाणछे सर्व आधारजी न० ॥ १७ ॥ अशुभक्रियानो त्याग छे। सुभ किरिया अप्रमादजी ॥ उत्तम गुण निरुक्तथी। लहो-चरणनो स्वादजी न० ॥ १८ ॥ सघन करमत महरणक्षु। भानुसमोतप जाणजी ॥ कपाय रहित बारभेदछे। तप पद मनमां आणजीन० ॥ १९ ॥ (ढाल) तीजी ॥ कपूर हुवे अति उजलो जी ए देशी। ए नवपद जिनधर्मनोजी सारभुत कहिवाय सिव सुखनो कारक सहीजी आराधो गुरु सहाय भविक जन सेवो जिन उपदेश पभणे प्रथम गणेश भ० ॥ २० ॥ ए नवपदथी नीपजेजी सिद्धचक्र यन्त्रराज आराधीने सुखलह्योजी जिम श्रीपालमाहाराज भ० से० ॥ २१ ॥ तब पूछे मगध-सरुजी कुण श्रीपालनरेश किमआराधिसुख-पामीयोजी करुणा करो गणेश भ० से० ॥ २२ ॥

गौतमस्वामि उपदिशोजी निसुणो श्रेणिक राजान चंपानगरीनो राजीयोजी श्रीपाल नाम सुजाण भ० से० ॥ २३ ॥ उंबर रोगे पीडीयोजी परणि राजकुमारी उज्जयणीमां जूहारियाजी रीषभेश्वर मनुहारी भ० से० ॥२४॥ मुनिचंद्रगुरु उपदेशथीजी आराध्यो सिद्धचक्र रोगगयो वलिसुख लह्योजी संपदा पामी जिमशक्र भ० से० ॥ २५ ॥ नव पद ओलीआंबिलतणीजी नवराणीने साथ उजमणो पूरण हुवांजी करि स्वरच्यो घणो आथ भ० से० ॥ २६ ॥ नवपडिमादेरासरुजी नव जीरणउद्धार पहिलो पद आराधियोजी नव पूजा मनुहार भ० से० ॥ २७ ॥ इम नव पद विस्तारथीजी पूजी लह्यो सुखसार आयू पूरण करि ध्यानथीजी नवमे स्वर्ग अवतार भ० से० ॥ २८ ॥ इम श्रीपालना भव थकी जी नवमे भव सहुसार निरुपम शिव सुख पामसे जी कहे गौतम गणधार भ० से० ॥ २९ ॥ श्रेणिक सुणि हरखित थयो जी प्रभुजीना वांद्या पाय । वीरजिनसर इम भणे जी सुण श्रेणिक नरराय भ० स ॥ ३० ॥ एक एक पद आराधतांजी केई पाम्या भव अंत नव पद ते निज आतमाजी ध्याता ध्येय लहंत भ० से० ॥ ३१ ॥ तीर्थंकर पद पामस्येजी तुंइणभरतमझार इम सांभलि नृप आनंदियोजी निज घरपोतो सुखकार

भ० से० ॥ ३२ ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर भुवन दिनयर नवपद महिमावरणव्यो सुरतचंदरराहि चोमासो सिद्धचक्र गुण गणस्तव्यो सवत उगणीसे पचोत्तर आश्विन शुदि सातमदिने जिनकृपाचंद्र सूरि पभणे वर्तो मंगल प्रतिदिने ॥ ३३ ॥

॥ इति नवपद वृद्ध स्तवनम् ॥



अथ दूजनो स्तवनम् ॥

(दुहा) वर्द्धमान जिन वदिये त्रिशलानदन देव सिहलछन सेवितसदा सुरपतिसारे सेव॥ १ ॥ जन्मसमेथी जग गुरु अतुलवलि वड वीर तप उत्तम विधियुतकर्यो जल निधि जिम गंभीर ॥ २ ॥ (ढाल पहली ॥) कृपानाथ मुझ वीनती अवधार॥ए देशी॥ धर्म करो जिनराजनोजी आणी उल्लट भाव दोय भेदे आराधतांजी पामो आत्म स्वभाव भविक जनसेवो श्री जिनवाणी निजगुण माणिनी खाणी ॥ भ० ॥१॥ तिथी आराधन फलतणोजी सास्त्र मांहे अधिकार बीज आराधो भवि जनाजी तप किरिया विधिसार ॥ भ० ॥ २ ॥ दोयमासलघु दुजनेजी जाव जीव उत्कृष्ट दोय वरस दोय मासनीजी करो बीज सुभ दृष्ट ॥ भ० ॥ ३ ॥ पडिकमणा दोय

टंकनाजी देव वंदन निरधार विधिसेतीफल नीपजेजी पामे भवनोपार ॥ भ० ॥ ४ ॥ बीज दिवसनो सहु जुवेजी चंद्रोदय सुप्रसिद्ध वधति कला तिम जाणजोजी धर्मथी वांछित सिद्ध ॥ भ० ॥ ५ ॥ दुविध धर्म जीनवर कह्योजी देशने सर्व विरत धर्म शुकल दोय ध्यानमांजी होय सदा निरत ॥ भ० ॥ ६ ॥ अर्थ प्रकासे जिनवरुजी सूत्र रचे गणधार विहूं सेवे वाचंय-मीजी द्वादश अंग विचार ॥ भ० ॥ ७ ॥ (ढाल दूसरी) ॥ नमोरे २ सेत्रुजगिरीरे ॥ ए देशी बीज दीवसमां जाणीयेरे कल्याणक सुविसालरे श्रावण सुदि बीजे चव्योरे सुमतिनाथ दयालरे नमोरे २ जिन चंद्रनेरे ॥१॥ माघ मासनी ऊजलीरे बीज दिवसमां जाणरे अभिनंदन जन्म्या प्रभूरे त्रिहुं जगना महिराणरे ॥ नमोरे० ॥ २ ॥ ए बीज तिथी वासपूज्यजीरे पम्या केवल ज्ञानरे फागुण सुदि बीजे जाणीयेजी अरनाथ चवन सुजाणरे ॥ मोरे० ॥ ३ ॥ समेतसिखर पर सिव वर्यारे सीतल जिनवर नाणरे चैतवदि बीज सुंदररे अविचल सुख मन आणरे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ इम कल्याणक इन तिथीरे काल अनंते होयरे अणंत कल्याणक जाणजोरे एह आगम विधि जोयरे ॥

नमो० ॥ ५ ॥ तप पूणर हूवा थकारे उजमणो सुविवेकरे रत्नत्रय आराधवारे धन खरचो बहुछेकरे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ सीमधरादि जिनवरारे विहरमान जिनवीसरे मनमदिरमां आवजोरे जिन कृपाचन्द्रसूरिसरे ॥ नमो० ॥ ७ ॥

॥ इति बीजका स्तवन सपूर्णम् ॥



अथ आठमका स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ वर्द्धमान जिनवर नमुं। समरी सार दमाय ॥ अष्टमी तपविधिवरणवुं । आगमयुत संप्रदाय ॥ १ ॥ आठमतिथी आराधवा। भाखे त्रिजगभाण ॥ विधिसेतीतप कीजीये । पामे उत्तम नाण ॥ २ ॥ (ढाल पहली) संभव जिनवर वीनति ॥ एदेशी ॥ आठम तप आराधिये। अष्टमी गतिदातारोरे ॥ प्रवचन माता आठने। पालोनिसदिन सारोरे । आठम ॥ १ ॥ अष्ट सिद्धि कारक सदा आठमतप उजमंतारे ॥ सामायक पोसहकरि । पर्व तिथी सेवंतारे ॥ आठम ॥ २ ॥ पर्व तिथीमां बंधाय छे। प्रायेपरभव आयुरे ॥ तिणकारण तिथीतपकरो । आगम मांहि गवायोरे ॥ आठम ॥ ३ ॥ वृहद्दावस्यक वृत्तिमां।

हरिभद्र सूरि बोलेरे ॥ तिम चूर्णि लघुवृत्तिमां । योग शास्त्रमां खोलेरे ॥ आठम ॥ ४ ॥ नवपद प्रकरण वृत्तिमां । दिन कृत्य देवींद्रसूरिरे ॥ विधि प्रपा पंचाशकवलि । इम अधिकार छै भूरिरे ॥ आठम ॥ ५ ॥ सामायक पहिलां कह्यो । पाछल इरियानो पाठरे ॥ जाणपण माने नहि । एह करमना ठाठरे ॥ आठम ॥ ६ ॥ विधिथी सामायक करो । जिम पावो भवपाररे ॥ अविधिथी किरियाकरी । न छूटे भवनो लाररे ॥आठम ॥ ७ ॥ (ढाल दूसरी) यतनी देशी ॥ परव तिथी पैपोषध करियै शुद्ध आगमने अनुसरियै वलि आठ कर्मने हरियै सलूणा भावभले आराधो एतो आराधि सिव सुख साधो सलूणा आठम तिथी आराधो ॥ १ ॥ आठम दोय चउदस कहियै अमावस पूनिम लहियै ए छह तिथी चारित्र वहियै ॥ स० ॥ भा० ॥ २ ॥ वलि कल्याणक तिथी जाणो पजुषण मनमां आणो इत्यादिक परव पिछाणो ॥ स० ॥ भा० ॥ ३ ॥ बीजे अंग पांचमे अंगे उपासकदशा सुख संगे आवश्यक टीका उमंगे ॥ स० ॥ भा० ॥ ४ ॥ इत्यादिक आगम भाखे पर्व तिथी पै पोषध साखे विधियुत करतां फल चाखे ॥ स० ॥ भा० ॥ ५ ॥ जे नित्य पोषहने ताणे आगम विधिते नवि जाणे हरिभद्र वचन परमाणे

॥ स० भा० ॥ ६ ॥ (ढाल ३) जइने कहजो मारा वालाजीरे ॥ ए देशी ॥ आठमपरव तिथी कही मारा वालाजीरे आराधो गुणगेह जगगुरु वंदिये मा० वा० ॥ १ ॥ ए तिथी कल्याणक घणा मा० वा० त्रिहुं कालना गिणो तेह ज० वं० मां० आचारंगमां भाखियो मा० वा० भावना अध्ययन सार ज० वं० ठाणांगठाणे पांचमे मारा० वा० कल्पसूत्र मनु हारज० वं० ॥ २॥ आगम प्रकरण चरित्र तणा मा० वं० एम प्रगटपणे तु जोयज० वं० छ कल्याणक वीरना मा० वा० आगम मांहे होय ज० व० ॥ ६ ॥ पजुपण कल्प कह्यो मा० वा० पञ्चाश दिवश प्रमाण ते नवि मानेमानथी मा० वा० जिन आज्ञा सुखखाण ज० व० ॥ ४ ॥ इम अनेक कल्पना करि मा० वा० मनमान्यो मानेकोय ज०व० तुज आगम सुज मन वस्यो मा०वा० ए हिज भव भव होय ज० वं० ॥५॥ विसवाद घणो पडगो मा० वा० केहने कहिये जाय ज० वा० अतिशय ज्ञानि तणो पड्यो मा०वा० विरहते केम खमाय ज० वा० ॥६॥ दुःषम कालमां ऊपनो मा० वा० दक्षिणभरतम झार ज० वं० प्रभुनो सरणोमे ग्रह्यो मा० वा० प्रभु छो प्राणाधार ज० व० ॥ ७ ॥ तारक तारो तातजी मा० वा० हुं छुं सेवक तुज ज० वं० अपराधि घणा तारिया मा० वा० केम विसारसो

सुज्झ ज० वं० ॥ ८ ॥ कलस ॥ श्री वीर जिनवर भविक सुखकर मात त्रिशलानंदनो में थुण्यो आगम भक्ति संयुत दुरित कर्म निकंदनो इम वरस उगणीसैचमोत्तर भाद्रव सुदि आठम समे कृपाचंद्र सूरिस्तवन कीधो अनुभव ज्ञानप्रकासमे इति अष्टमी स्तवनम् ॥

॥ अथ श्री भोयणीजि तीर्थका स्तवन ॥

॥ राग सोरठ ॥ दीठा भोयणी गाम मझारा ए तो मल्लिजिनंद मनुहारा ॥ दी० ॥ मुक्ताफल सम द्युति प्रभुजीकी सुरति मोहन गारारे ॥ दी० ॥ १ ॥ चरण कमल कंचन कच्छपसम मानुं जगदा-धारा जानुअनोपम जिनना निरखी मोहराज गयो हारारे ॥ दी० ॥२॥ कर सरोरुह अद्भुत जाणी पङ्कज जलधि मझारा कटी सुरंगि जिननी प्रेखी केसरी अरण्य विहारारे ॥ दी० ॥ ३ ॥ प्रभु वक्ष स्थल धीरजथी लजि मेरु अचला धारा जिन गंभी-रता जाणी चर्म दधि लोकांतकीन विहारारे ॥ दी० ॥ ४ ॥ निर लांछन प्रभु मुख जोइने, शशधर नित्य विहारा नासिका दीपशीखासम जाणी दीपक चंचल कारारे ॥ दी० ॥ ५ ॥ नयन अमीरस पूरण प्रभुना कुरंग अटवी आधारा भालविशाल अनो-

पम राजे अष्टमी शशी समकारारे ॥ दी० ॥ ६ ॥ देश विदेशका जात्रि आवे भेटे प्रभु दीदारा विविधोत्सव पूजा करे प्रभुनी भाव धरि सुविचाररे ॥ दी० ॥ ७ ॥ घणा दीवसथी आश धरीने आयो जगदाधार कृपा चद्र निज सेवक जाणी सुनिजरकरो सुख कारारे ॥ दी० ॥ ८ ॥ शुभ उगणीसे गुणत्तरे वरसे वैशाख शुदि सुविचार आठम दिन प्रभुपदकज भेट्या आनद अधिक अपारारे ॥ दी० ॥ ९ ॥

॥ इतिश्री भोयणीजी तीर्थका स्तवन सपूर्णम ॥

अथ श्री संखेसरजीनो स्तवन ।



देशी जिह्मानी ॥ जग गुरु श्री संखेसर मंडन पास जिनदा हो सुखकारी महाराज भव भय वारण शिव सुख तरुनो कद हो दयाल ॥ ज० ॥ श्री अस्वसेन नरेश्वर कुल नभ चंदा हो सु०वामामात सुजात जगत आनंदा हो ॥ द० ॥ १ ॥ ज० ॥ सुंदर नील वरण छवि अद्भुत छाजे हो ॥सुख॥ मा० ॥ देहप्रमाण अनोपम नवकर राजै हो ॥द०॥ ज० ॥ रूप अधिक तुम देखी रति पति लाजे हो ॥ सु० ॥ मा० ॥ सहुसुरनर मिल सेवे वांछित काजे हो ॥ द० ॥२॥ज०॥ प्रभावतीना प्राणेसर प्रभु प्यारा

हो ॥ सुख० ॥ मोह भूपनी लीला थकी तुम न्यारा हो ॥ सुख० ॥ कमठमहासठमानविदारणहारा हो ज० तारण नाग नागेंद्र बणावणहारा हो ॥द०॥ ३ ॥ ज० जोवन वयमें दीक्षा लीनी सुविचारी हो ॥ सु० ॥ मेघमाली उपसर्ग करी गयो हारी हो ॥ द० ॥ ज० ॥ केवल पामी जगत जीव उपगारी हो ॥ सु० ॥ संघ चतुर्विध थापी वर्या शिवनारी हो ॥ द० ॥ ४ ॥ ज० ॥ तुम मोटा त्रिभुवनना नाथ कहावो हो ॥ सु० ॥ दीठां भविने दिलमां अधिक सोहावो हो ॥ द० ॥ ज० ॥ तारण तरण तुमे एवडो बिरुद धरावो हो ॥ सुख० ॥ तो मुज तारतां वार हवे नविलावो ॥ हो द० ॥ ज० ॥ देवल कहूला जगमें देवता दीठा हो ॥ सु० ॥ मुज मनडेजां तेनविलागा मीठा होद०॥ज० सरागीपणो पामी थया ते धीठा हो ॥ सु० ॥ वीतराग प्रभुमुद्रा दीठी वली ठाहो ॥ द० ॥ ६ ॥ ज० ॥ काल अनादि थी पर परिणतिमां रमियो हो ॥ सु० पुद्गल संगे च्यार गतिमां भमियो हो ॥ द० ॥ ज० ॥ हिव प्रभु मूरति जोतां पातिक गमियो हो ॥ सु० ॥ प्रभुजी प्रसादें मोहराज उपसमियो हो ॥ द० ॥ ॥ ७ ॥ सांति सुधामय नवलो जिन दीदार हो ॥ सुख ॥ निरख्यो आज आनंद भरी सुखकार हो ॥ द० ॥ ज० ॥ पुन्य प्रबल थयो

अधिक दिवस श्रीकार हो ॥ सु० ॥ भगत वत्सल भले भेट्या प्रभु मनुहार हो ॥ द० ॥ ८ ॥ ज० ॥ चढियार देशमां श्रीसखेसर स्वामी हो ॥ सु० ॥ सुगुरु पसाये हिव प्रभुसेवा पामी हो ॥ द० ॥ उगणोत्तरे उगणीस वैशाख नामी हो ॥ सु० ॥ कृपाचद विभुपदकजमन विसरामी हो ॥ द० ॥ ज० ॥ ९ ॥

इति पदम्

अथ दीवालीको स्तवन लि: ।

॥ दुहा ॥ वर्द्धमान जिनचंदकु नमन करी करजोड कल्याणक विधि वर्णवु मनमां आणी कोड ॥१॥ वीर जिणद [illegible] मम, समरसर्य गुण खाण भव्य कमल प्रतिन, त्ना त्रिभुवन जनमाहिराण ॥ २ ॥ (ढाल पहली) प्रथम जिनेसर प्रणमीये ॥ ए देशी ॥ वर्द्धमान जिनराजजी गुण गण अगम अपार चोवीशम जिनचद जगत सुह करु सर्व जीव सुखकार ॥ च० ॥ ३ ॥ समकित पामीने प्रभु भव सत्तावीसकीधा वीसथानक तप सेवी जिन नाम बांधियो स्वर्गतणा सुख लीधा । च० ॥ ४ । इन्द्र आदेशथी आश्विन वदि त्रयोदशी दीश हरणेगमेसी संक्रमण करया प्रभुमतिथी त्रिश-

लाकूखै जगीश ॥ व० ॥ ७ ॥ चउद सुपन त्रिशला जुवै कल्याणक फल एह वृद्धि पाम्या नरेशर सर्व प्रकारथी जाग्रत थयो अति स्नेह ॥ व० ॥ ८ ॥ चैत्र शुदि तेरस समे जन्म थयो सुप्रसिद्ध, दिगकुंमरी तिहा तत्क्षिण सूतिकारज करे इंद्र आवे बहु रिद्ध ॥ व० ॥ ९ ॥ पंचरूप करी प्रभु ग्रही मेरु सिखर ले जाय, चौसठ सुरपति आवि जन्मोत्सव करी, माता पासे ठाय ॥ व० ॥ १ ॥ नंदीसर उछव करी देव गया निज ठाम सर्व संपदाव धितेहथी प्रभुनो थापीयो वर्धमान शुभ नाम ॥ व० ॥ ११ ॥ सिद्धारथ राजा घरे वरते मंगल माल इंद्राणि उछरंग रमाडे प्रभुभणी करति रंगर साला ॥ व० ॥ १२ ॥ आमलकी कीडा करे देव परिक्षा काज हारि गयो देव बालक प्रभुनामपामीयो माहावीर माहाराज व० १३ ॥ जोबनवय जिनराजजी परण्या रमणि मनुहार संसारिक सुख जाण्योकृत्रिम जगनाथजी कृपाचंद्र सुखकार ॥व०॥ १४ ॥ (ढाल बीजी) तीस वरस घरमा रह्या मनमोहनजी दीधो वरसी दानरे जग सोहनजी मातपीता स्वर्गे गया ॥ मन० ॥ प्रतिज्ञा पूरण जाणरे ॥ जग० ॥ १५ ॥ च्यार निकायना देव मलि ॥ मन० ॥ दीक्षा उछव कीधरे ॥ जग० ॥ मिगसर वदि दशमी विभु ॥ मन० ॥ सुखकर संजमली

थरे ॥ जग० ॥ १६ ॥ मन पर्यवज्ञान ऊपनो ॥ मन ० ॥ चउनाणी भग वंतरे ॥ जग० ॥ एकाकी प्रभु विचरता ॥ मन० । करूणानिधि वलवंतरे ॥ जग० । १७ ॥ परिषहरिपु जीतता ॥ मन० । पराक्रमे वड वीररे ॥ जग० । तप करता अति आकरो ॥ मन ॥ पाम्यो भव जलतीररे ॥ जग० । १८ ॥ वार वरस छद्मस्थरह्या ॥ मन० । ऊपर सार्ध छ मासरे ॥ जग० । वैशाख सुदि दशमीये ॥ मन० । उपनोके बल खासरे ॥ जग० ॥ १९ ॥ लोकालोकने जाणता ॥ मन० ॥ पावापुरिजिनराजरे ॥ जग० ॥ संघचतुर्विध थापिने ॥मन०॥ सीधा सगला काजरे॥जग०॥ २०॥ समवसरणमां विराजता ॥मन०॥ पर उपगारि महंतरे ॥ जग० ॥ देशनादेता भव्यने ॥ मन० ॥ प्राप्त करे सुखसतरे ॥ जग० ॥ २१ ॥ गोतमादि गणधरा ॥ मन० ॥ इग्यारह मनुहाररे ॥ जग० ॥ चेउद सहस मुनिवर हुवा ॥ मन० ॥ श्रमणी छतीस हजाररे ॥ जग० ॥ २२ ॥ एकलाख गुण सटसहस ॥ मन० ॥ श्रावकनो परिवाररे ॥ जग० त्रण लाख अढार हजार ॥ मन० ॥ श्राविका सुविचार रे ॥ जग० ॥ २३ ॥ इत्यादिक परिवार थी ॥ मन० ॥ परवरिया गुण साररे ॥ जग० ॥ अंतिम चोमासो रह्या ॥ मन० ॥ पावापुरी मझाररे ॥ जग० ॥ २४ ॥ सोल पहर लगदेशना ॥ मन० ॥ दीधी पर उपगा-

रे ॥ जग० ॥ पुन्य पाल राजा तणा ॥ मन० ॥ प्रश्ननो उतर साररे ॥ जग० ॥ २५ ॥ पंचम आरेना भाव कह्या ॥ मन० सव जिवने हितकाररे ॥ जग ॥ पुन्य-पाप ना फलतणा ॥ मन० । अध्यन पचावन साररे ॥ जग० । २६ ॥ छत्रीश वलि उत्तर कह्या ॥ मन० । मरुदेवी अधिकाररे ॥ जग० । वहोतर वरसनो आउखो ॥ मन ॥ पूरण करि हितकाररे ॥ जग ॥ २७ ॥ कार्ति वदि अमावसे मन ॥ सुगति सिधाया वीररे ॥ जग ॥ सादि अनंत स्थिति लही ॥ मन० । तोडया कर्म जंजीररे ॥ जग० । २८ ॥ कासी कोसलनाराजवी ॥ मन ॥ पोसह कर्यो सुखकाररे ॥ जग ॥ भाव उद्योत गयांथकां ॥ मन ॥ रत्न सुक्या सुविचाररे ॥ जग ॥ २९ ॥ देव देवी आव्या वणा ॥ मन ॥ प्रभुनी भक्ति विशेषरे ॥ जग ॥ दीवाली थइ लोकमा ॥ मन ॥ लह्यो गौतम ज्ञान अशेषरे ॥ जग ॥ ३० ॥ बीजने भाइ जमाडीयो ॥ मन० ॥ भगनीये भाइ बीजरे ॥ जग० ॥ छठ करीपोसहकरो ॥ मन० ॥ गुणना तीन लहीजरे ॥ जग० ॥ ३१ ॥ छकल्याणक वीरना ॥ मन० ॥ गाया भक्ति विशालरे ॥ जग० ॥ जिनकृपाचंद्रसूरि भणे ॥ जग० ॥ वर्त्योमंगल मालरे ॥ जग० ॥ ३२ ॥

॥ इति दीवालीको स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बीजनी थुइ लिः ॥

वास पूज जिन अतरजामी, मनविसरामी स्वामीजी ॥ भविजन तारण शिव सुखकारण, निजगुणना प्रभु कामीजी ॥ बीजदिवस जिनवर शिव सुखकर, चद्रविमाने पामीजी ॥ नगर सुहारिमां मनुहारि, सेवो जिन सुखधामीजी ॥ १ ॥ वासु पुज्य पद्मप्रभु राता' चद्र सुविधि जिन धवलाजी ॥ मल्लिपास दोयनीला जाणो, मुनि सुव्रत नेमीकालाजी ॥ आठ त्रिगुण जगनायक लायक, सोवन वरण सुहायाजी ॥ बीजदीवस नव नव चउहिक जिन वदु अहनिश पायाजी जी ॥ २ ॥ दुविध धर्म जिनवर प्रकाश्यो, अर्थ अविरु सुखकारिजी ॥ सूत्रे करि गणधर गुरू भाख्यो, भविजनना उपगारिजी ॥ दोय शिक्षा दोय नय निक्षेपा. चउ भगी मन आणोजी बीज आराधि संवदा साधि, परमारथ पहि चाणोजी ॥ ३ ॥ बीज दिवस उपवास करीजे, पडिकमणादिक सारोजी ॥ ए तप सुरतरु सरिखो जाणो, निरुपम सुख दातारोजी ॥ कुमार यक्ष तिमशासन देवि, चंडासानिधभूरिजी ॥ शुभ फल दायक संघने होज्यो, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥

॥ इति बीजकी थुइ सपूर्ण ॥

अथ पंचमीनी थुइ लिः।



नेमि जिनेसर जग परमेसर, पंचमि गतिना दाताजी ॥ श्रावण सुदि पंचमि दिन जनम्या, त्रिभुवनमें विख्याताजी ॥ समुद्रविजयनंदन, जगवंदन, सीवादेवि माताजी ॥ सहस वरस प्रभु आयुष पाली, पाम्या सिघसुख साताजी ॥ १ ॥ कातिवदि संभवकेवल पाम्यो, मगसर सुविधि जायाजी ॥ चैत्र चंद्रजन्म अजित संभव, अनंत सुदि सिव पायाजी ॥ वैशाख वदि कुंथु जिन दीख्या, पंचमि जगत सुहायाजी ॥ धर्म धवल जैठ पंचमि सीधा सुरनर मिल जश गायाजी ॥२॥ पंचमि तपविधि भाखे जिनवर, अर्थ अधिक सुखकारीजी ॥ सूत्रे गणधरगुरु शुभ दाखे, आगम माहि सारिजी ॥ नंदि विधिकरी देव वांदीनेका उसग्गमन धारीजी ॥ इकावन ज्ञानना भेद नमीने, श्रुत ज्ञान सेवो इक तारीजी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणो दोवटंक करीने, ज्ञान आराधो प्राणीजी ॥ मगसरादि षट मासमां उचरो, आगममांहि गवाणीजी ॥ जिन आणाधारक सुखकारक, खरतरगण श्रुत खाणीजी ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिपभणे, साशन देवी सुहाणीजी ॥ ४ ॥

॥ इति पंचमीकी थुई संपूर्ण ॥

अथ अष्टमीनी थुई लि।

आठ प्रातिहारज जसुसोहे, मोहे भविजन चंदाजी ॥ चद्रप्रभु आठम दिन सेवो अनुभव रसनाकंदाजी ॥ आठ प्रमादतजीने, धारो परमातम पद सारोजी ॥ द्वीप नदिसर यात्रा करतां, अरिहत ध्यान प्रकारोजी ॥१॥ रिषभ अजित सुमति सुव्रत नमि, सुपारस संभव आयाजी ॥ आदीश्वर दीक्षा अभिनंदन, नेमि पास सिध पायासी ॥ भिन्न मास अष्टमी कल्याणक, तीन कालमा जाणोजी ॥ आठ जातिना कलश लेइने, स्नात्र करे सुर राणोजी ॥ २ ॥ आठे प्रवचन माता पालो दोष सर्वने टालोजी ॥ ज्ञानादि आठ आचार सेवीने, आतमतत्त्व निहालोजी ॥ वीर जिनेसर अर्थ प्रकासे, सूत्रर्चगणधारीजी ॥ आठम तप आराधि भविजन, आठ वरस अधिकारीजी॥ ॥ ३ ॥ पर्व तिथीमेपोषध भाख्यो, सिद्धांत छे जसु साखीजी ॥ पडिकमणो तप जप आदरीये, देव वंदनविधि राखीजी ॥ आठ मगल आराधतां पावे, सुखसंपति गुणभूरिजी ॥ श्रुतदेवी सुपसाय लहीने, श्री जिन कृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥

॥ इति आठम थुई सपूर्ण ॥

अथ इग्यारसनी थुइ लीः।



एकादसी आखि आदि देवे आराधिने भवि सिव शर्म लेवे ॥ धरो ध्यान श्रीजिनराज केरो। टले अनादि कालनो कर्म हेरो ॥ १ ॥ सहि जन्म दीक्षा केवल पन्नाणं। अरनाथ चारित्र नमि परमनाणं ॥ दश खेत्रना कल्याणक एम जाणो। दोढसोने घलि अणसो पिछाणो ॥ २ ॥ इग्यारे वरसतिममा सकीजे। आराधि अंग इग्यारह सुजस लीजे ॥ मौन मन धारी शुभ धर्मकारी। श्रुतज्ञाननी भक्ति करिये विचारी ॥ ३ ॥ अठ पोहरि पोषह करि यथा शक्तें। तप जप करी उज्जमणो सुभक्तें ॥ इक चित्त ध्यावै सुयदेवि पसावै। श्री जिनकृपा चंद्र सूरि सदासुख थावै ॥ ४ ॥

॥इति थुइ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदजीनी थुइ लि० ॥

श्री सिद्ध चक्र सुहंकर जाणो ध्यान एसवि जन मनमां आणो आतमतत्त्र पिछाणो, निरुपम सिव सुखकारण जाणो आतमने निजघरमां आणो अविचल संपदा खाणो ॥ श्रीपालराजा नवपद साधे सुरसुख पामी सिव समाधे अरिहंत पद

आराधे, मनमोहन जिन गुण अगाधे दायक लायक सिद्धि अबाधे जग जश कीरति लाधे ॥ १ ॥ बारे गुण करि अरिहंत राजे सिद्ध आठ गुण गणि वर काजे गुण छतीशविराजे । पचीश गुण उवज्झायराजे सत्तावीस मुनिमहाराजे सेवीगुण सुसमाजे ॥ दर्शन ज्ञान चरण तप कहिये सिडसठ इकावन सितर लहिये भेद पचाश क्रम कहिये, तेर सहसवलि गुणनो करिये चउविसाजिनपति ध्यानजवीरिये इम भवसायर तरिये ॥ २ ॥ आसुमासनी सातमसेती नव आंबिल करो सुखदेति चेतरमा सवहेति नव ओलिशुध भावे लेति इयथासिआंबिल सद्देहेति बोधबीजनी खेति श्री श्रीपालने मयणाराणि हरष भरि हियडे हुलसाणि नवपद ध्यानधराणि नवपदनी नित्य स्तवना जाणि करो भविकजन शास्त्र प्रमाणी आगममांहि गवाणि ॥३॥ त्रणटक पांच शक्रस्तव कीजे टोयटंक आवश्यक लीजेकाउसग्ग नित कीजे खमासमण शुद्ध चितमां धारो प्रदक्षिणा करि गुण संभारो जिम छुटे भव लारो देवी चक्केसरि सांनिधकारि विमलेसर पूरे आस हमारि सिद्ध चक्रविधिसारि श्रीजिन कृपाचंद्रसूरि भाखे जिन आणा मनमांहि राखे भवि शिवसपदा चाखे ॥ ४ ॥

॥ इति नवपद शुइस ॥

॥ अथ नवपद सज्झाय ॥



॥ कृपानाथ मुज विनति अब धार ॥एदेशी॥
सिद्धचक्र फल दाखव्योजी श्री गौतम गणधार नृप श्रीपाल आराधिनेजी पामसे भवनोपार सुज्ञांनि नवपद मनमां धार जिम लहो सुख अपार ॥ सुज्ञांनि ॥१॥ तीन तत्व आराधसोजी देवगुरुने धर्म दोय तीन चऊ भेद छेजी जाणो नवपद मर्म ॥ सुज्ञांनि ॥२॥ अरिहंत सिद्ध दोय देवनाजी भेद लहो सुजाण आचारज पाठक बलिजी मुनि त्रण गुरु तत्वजाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ दर्शन ज्ञानचरित्रछेजी तप चोथो धर्म भेद ए त्रण तत्वना जाणजोजी नवपदनां उमेद ॥ सु० ॥ ४ ॥ काल अतीत जे सिद्ध थयाजी वर्तमानमां थाय अनागतमां शिव पामसैजी ते नवपद सुपसाय ॥सु० ॥ ५ ॥ नवपदना पर भावथीजी नवनिधि प्रगटे सार आधि व्याधि दूरेटलेजी कहे श्री जगदाधार ॥ सु० ॥ ६ ॥ नव आंबिल ओलीकरीजी जपतां नवपद जाप त्रण टंक देव वंदन करीजी काउसग्गथी जाय पाप ॥ सु० ॥७॥ नव ओली विधियुत करीजी उज्जमणो निरधार गुरु मुखथी विधि जाणनेजी संघभगति सुखकार ॥ सु० ॥ ८ ॥ नवपद ध्याता आतमाजी ते नवपद

कहिवाय जिन कृपाचद्रसूरि सेवतांजी निरुपाधिक सुख थाय ॥ ९ ॥

॥ इति सिझाय सपूर्ण ॥

महावीर स्तवनलि.

कर्मतणी कथनीरेकीहां जइने कहुं ॥ एदेशी॥ वीर जिनेसर अलवेसर प्रभु सांभलो, मुनिजर धरि सेवकनी एअरदासजो, वालेसरविनकेहने करीये वीनती, इम जाणीने आव्यो तुमारी पासजो ॥ वी० ॥ १ ॥ काल अनादि रअल्यो हुं संसारमां भवभव भमतां दुःख सह्या अपार जो वीतराग तमे तारक जाणो तातजी, तोपण वीतक वात कहुं निर धारजो ॥ वी० ॥ २ ॥ काल अनंत रहियो सुक्षम निगोदमां, व्यवहारे तर राशीदोय कहत जो श्वासोश्वासमां अधिका सतरे भवकर्या इम करते नवि पाम्यो भवनो अंत जो ॥ वी ॥ ३ ॥ काल लब्धि पामीने परित्त पणां लह्यो, पृथिव्यादिक व्यवहारमां आव्यो तेण जो । कर्म उदय थी फरि पडियो निगोदमां, पुद्गल परियट्ट असंख्य रह्यो दुहेणजो ॥वी० ॥४॥ व्यवहार राशिकहवाणो हु तिहां ए जाणूं तुझ आगमथी जगतात जो, एकेंद्रिय मावसताकाल घणो गयो तेहनी केवली कहुं तुम-

६ ॥ इम अनेक मुनिवर इहां होराज ॥ थां० ॥
सिद्ध वधु भरतार थया गीरीफरसतां होराज
॥ वि० ॥ थां० ॥ ७ ॥ पूरव पुन्य पसाउले होराज
॥ थां ॥ सफल फली सहु आस जात्रा विधिसुं
करी होराज ॥ जा० ॥ थां० ॥ ८ ॥ रतनपुरीथी
आविया हो० ॥ थां० ॥ आनंद कुंवर सुभ भाव
लाभलीधो घणो होराज ॥ ला० ॥ थां ॥ ९ ॥
चतुरा चोमासो रह्या होराज ॥ थां० ॥ भगवति
सुण्यो भले भाव उपधान तप आदर्यो होराज
॥ उ० ॥ थां ॥ १० ॥ उछवरंग वधामणा होराज
॥ थां० ॥ वरत्या जय जयकार सुगुरु सुपसायथी
होराज ॥ सु० ॥ थां ॥ ११ ॥ खरतर वसी छिंपा-
वसी होराज ॥ थां० ॥ साकर उजूम हेम प्रेमवाला
वसी होराज ॥ पे० ॥ थां० ॥ १२ ॥ मोती विमल
वसी आवीया होराज ॥ थां ० ॥ उलकाकोल
सिद्धसिला सिद्धवड फरसीया होराज ॥ सि० ॥
थां ॥ १३ ॥ सुभ उगणीसे मित्तरे होराज ॥थां०॥
पोसदसमी सुविदीत आनंद सुखपामिया होराज
॥ आ० ॥ थां० ॥ १४ ॥ भव भव चाहुं चाकरी
होराज ॥थां०॥ प्रभुचरणारीनित्त कृपाचंद्र बीनवे
होराज ॥ कृपा० ॥ थां० ॥ श्री सिद्धाचल सिखरे
रुषभ भले भेटिया होराज ॥ रुष० ॥ थां० ॥१५॥

॥ इति सिद्धाचलगीरी स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचमिका वृद्ध स्तवन लि० ॥



॥ दुहा ॥ सिद्धारथ कुल दिनमणि । त्रिसला देवि सुजात ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं । नमन करि परभात ॥१॥ गुरु दरियो भरियो गुणे किण विधि तरियो जाय ॥ बलिहारि गुरु देवनी मो मन रह्यो लोभाय ॥२॥ जिन वाणी पीयूषरस पान करो निशि दीश ॥ पांमो नाण सुहंकरु। भाखै जगनाईश ॥३॥ (ढाला) रूप्र कुंवै अति ऊजलोजी ॥ ए देशी ॥ ज्ञान आराधो भविजनाजी । आणि भक्ति अपार पांच ज्ञान प्रगटायवाजी । पचमी सेवो उदाररे प्राणि जिनवाणि मन आण अनुपम सुखनी खाणरे ॥प्रा॥ जिन ॥ १ ॥ नाण बडो संसारमाजी ज्ञानथी सुगति थाय ज्ञान दीपक भ्रम जाणियेजी सर्व लोक प्रगटायरे ॥ प्रा० ॥ जिम ॥ २ ॥ दिव्य ज्ञान लोचन कह्योजी लोकालोक देखाय ज्ञान विनापलुसारिखोजी जाणे नहीं नर कांयरे ॥ ॥ प्रा० ॥ जिन ॥ ३ ॥ ज्ञान आराधक सर्वथीजी किरिया देशविचार भगवति सूत्रमां भाखियोजी आठमें शतक मझाररे ॥प्रा०॥जि०॥ ४ ॥ अज्ञानी कोड वरसमांजी तप करि निर्जरा जेह ज्ञानी स्वासोस्वासमांजी कर्मक्षयकरे तेहरे ॥प्रा०॥जि० ॥५॥

उपगारि श्रुत नाणथीरे जाणे आज त्रिकालरे ॥सु०॥ परबोधक श्रुत सैवियेरेलाल सदगुरु चरण निहालरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २७ ॥ वायण प्रछना परावर्त्तनारे अनुपेहा दिलधाररे ॥ सु० ॥ धर्मकथा कही कीजीयेरे ॥ ला० ॥ सझाय पांच प्रकाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २८ ॥ अंग इग्यार बार उपांगछेरे दश पयन्ना नंदीशरे ॥ सु० ॥ छ छेद चउमूल दिलधरोरे ॥ ला० ॥ अनुयोगद्वार पैतालीशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥ ढाल चोथी ॥ गरवेनी स्वामी शरीर सोसाइ गयो ॥ एदेशी ॥ ज्ञान भजो भवि प्राणीया वंछित फलदातार ज्ञानी दीपक सम कह्यो सूत्रे श्री गणधार ॥ज्ञान०॥ ३० ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवि कल्पलता अनुकार एहथी अधिको जाणिये महिमा अगम अपार ॥ ज्ञा० ॥ ३१ ॥ काल अनादि लगे भम्यो मिथ्यामति भवमांय सम्यग् ज्ञान प्रगटे यदा भवमें न रहाय ॥ ज्ञा० ॥ ३२ ॥ समकित गुण प्रगटायवा त्रण करण करे जीव समकित ज्ञान एकण समे लहे सुख अतीव ॥ज्ञा० ॥३३॥ देश विरति पामे तदा पल्य असंख्यभाग जा य सर्व विरतिलही चरण धर ज्ञानादिक चितलाय ॥ ज्ञा ॥०॥३४॥ घाति करमनो क्षयकरी केवल ज्ञान प्रकाश भव्यकमल प्रतिबोधता विचरे भगवंत खास ॥ ज्ञा० ॥ ॥ ३५ ॥

ज्ञानचरण दोय भेदछे मुक्ति कारणजाण तप संजम विहुं दाखिया भाव ए मनमां आण ॥ज्ञा०॥ ॥ ३६ ॥ पांचमि आराधना करि, ज्ञान भगति करो सार, तप पूरण थयां कीजिये उजमणो सुविचार ॥ ज्ञा० ॥ ३७ ॥ पांच पांच ज्ञानादिना उपगरण करो सार धन खरचो बहु भावथी लहो पुन्य भंभार ॥ ज्ञा० ॥३८॥ देवो दान सुपात्रने साहमी-वछल सार भगतिकरो साहमी तणी रात्रि जागो उदार ॥ ज्ञा० ॥ ३९ ॥ वरदत्तने गुणमंजरी ज्ञान आराधिने सुख, पामी अविचल पदलह्या मेटीने भव दुःख ॥ ज्ञा० ॥ ४० ॥ कलश । संवत् उगणीसे, पिचत्तर पोषवदि एकम भले सुरत बंदर भविक सुखकर सीतल जिन सुपसाउले श्रीवीर जिनवर पंचमितप विधि प्रकाश्यो सुभमणे सुविहित परंपर गच्छखरतर जिन कृपाचंद्रसूरि भणे ॥४१॥

॥ इति पंचमी २ ढालनी स्तवन ॥

॥ अथ इग्यारसनो २ ढालनी स्तवन लि० ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्ति श्री मंगलकरण हरण ताप जिणचंद वीर जिनंद दिनंदनम प्रणमुं धरि आनंद ॥१॥ गौतम आदि गणधरा श्रुतकेवलि सुविहाण त्रिकरण योगे वंदता पामेकोट कल्याण ॥ २ ॥

एकादशी तिथी वर्णवुं शास्त्रतणे अनुसार विधि पूर्वक आराधतां पामें पद निर्वाण ॥ ३ ॥ (ढाल पहली) पणिआरनि ॥ देशी ॥ नेमिजिनेसर ऊपदिशै सुखकारिरे लोय सांभले कृष्न राजान वा लाछो द्वारिका नगरी समवसर्या ॥ सु० ॥ रेवताचल उद्यान ॥ वा० ॥ ४ ॥ पर्वाराधन फल कह्यां ॥ सु० ॥सांभले परषदा वार ॥वा०॥ पर्युषण चउमासा भला ॥सु०॥ नवपद ओलीसार वा० ॥ ५ ॥ पंचमी बीज आठम कही ॥सु०॥ जिन कल्याणक जाण ॥ वा० ॥ एकादशी इम जाणियै । सु० ॥ पर्वाधिक मन आण ॥ वा० ॥ ६ ॥ मगसर सुदि एकादशी ॥ सु० ॥ पर्वमाहि श्रीकार ॥ वा० ॥ अरनाथ दीक्षा ग्रही ॥ सु० ॥ पाम्या भवनोपार ॥ वा० ॥ ७ ॥ मल्लि जन्म संजमलियो ॥ सु० ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ वा० ॥ नमि नाथने ऊपनो ॥ सु० ॥ केवल नाण प्रधान ॥ वा० ॥ ८ ॥ पांचकल्याणक अतिभला ॥ सु० ॥ थया इण भरत मझार ॥ वा० ॥ तिमहिजऐरवत खेत्रमां ॥ सु० ॥ भाखे जगदाधार ॥ वा० ॥ ९ ॥ पांच भरत ऐरवतवलि ॥ सु० ॥ पांचकल्याणक जाण ॥ वा० ॥ दशखेत्रनां इम जाणियै ॥ सु० ॥ पांचकल्याणक आण ॥ वा० ॥ १० ॥ तीनकाल गिणतां थकां ॥ सु० ॥ दोढसै कल्याणक थाय ॥ वा० ॥ तिथी-

मांहि सिरोमणि ॥ सु० ॥ इग्यारस सुखदाय
वी वा० ॥ ११ ॥ अनंतकल्याकण इण परे ॥ सु० ॥
अनंत चोवीसी जोय ॥ वा० ॥ मौनकरी आरा-
धिये ॥ सु० ॥ एहथी सिवसुख होय वाला ॥०१२॥
चोविहार उपवासथी ॥ सु० ॥ पोसह करिने सार
॥ वा० ॥ सुगुरु चरण सेविकरी ॥ सु० ॥ काउ-
सग्ग दिलधार ॥ वा० ॥ १३ ॥ मोनकरी मल्लि
नाथजी ॥ सु० ॥ एकादिवस सुखकार ॥ वा० ॥
मौन प्रथा इण परि थइ ॥ सु० ॥ लह्यो केवल
श्रीकार ॥ वा० ॥ १४ ॥ (ढाल बीजी) माता
त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे ॥ एदेशी सुखकर
देवनिरंजन नेमाजिनंद इम उपदिसै ॥ ए आंकडी ॥
भविजन भावधरिने सांभले श्री जिनवाण, अमी-
रस वयणे श्रवणअजलीभरपीवतां एतो जाये
भव भव निर्भित कर्म निवाण ॥ सुख० ॥ १५ ॥
भवियण अंग इग्यार आराधवा तप विधिए
कही, जेहथीपामे अनुपम महिमा अतुल
अपार वरसइग्यारने मास एकादश तप करो
संपूरण तप हुवा होवे मंगलकार ॥ सु० ॥ १६ ॥
॥ भ० अंग अग्यारे लिखावे सुवरण अक्षरे
पुस्तक पूठा ठवणी नवकरवाली सार, कवली
झिलमिल पाटीने वलि पाटली वीटणामखमलरे
सम वरतणा मनुहार ॥ सु १७ ॥ भ० डोरालेखण

झावी वासकूंपावलि कोथली, बटवा मिजासणने चंदरवा अधिकार पूठीया चोपड रूमाल नाना जातिना घाटा पाटलाने त्रिगडो रचै सुखकार ॥ सु० ॥ १८ ॥ भ० केसर सूखड खसकूचीने वाटकी प्यालाने कलसा अंगलूहणा दिलधार चामर छत्र त्रयने आभूषण रत्ने जम्पा रचियै वास क्षेपादि पूजा विविधि प्रकार ॥ सु० ॥ १९ भ० देवपूजा तिम गुरुपूजा विधि आदरो करियै साहमी वच्छल धरियै भावविसाल रात्रिजागो करिजिन गुण गावै प्रीतसुं अधिको धनखरचीने लहिये रंगरसाल ॥ सु० ॥ २० ॥ भ० इग्यारसनो तपसे वो भवियण भावसुं सुव्रत सेठे कीधो पौषधथी चितलाय चौर अग्नीना उपद्रवथी ते उगर्यो एतिथी सेव्यां सिवमारग्यां सुखे जवाया ॥ सु० ॥ २१ ॥ कलश ॥ इन नेमिजिनवरस्यामसुखकर सिवा देवी नंदनो एकादशी तप फल प्रकास्यो भविकजन आनंदनो सर, नय, निधि, भूविक्रमवरसेपोष वादि एकादशी जिन कृपाचंद्रसूरि पभणों सुगुरु सेवो उल्लसी ॥ सु० ॥ २२ ॥ इति इग्यारशवृद्ध स्तवनम् ॥

॥ इति कृपाचंद्रसूरि विरचितस्तवन संग्रहः संपूर्णः ॥

॥ देशनालिख्यते ॥

जात्रा नवाणु करीये ए चाल.

एहवा सदगुरु वांदीए भविकजन एहवा स०॥ आप तरे अवरनकुं तारे सरणतिहारोगहिये भ० ॥ १ ॥ जिमसारथपतिसार्थाजनकुं वाछितदेशेव-हीये भ० ॥ २ ॥ तिमसदगुरुअमृतउपदेशे लहेभ-विकसुखकहीये भ० ॥३॥ गोपसमागुरुगुण,नितधारे राखेगोजनमहीए भ० ॥ ४ ॥ वलिनिर्यामकउपमा-धारे जिमनायिकनौतरीए भ० ॥ ५ ॥ एकअसंजम-दोयाविधिबंधनात्रिविधदडपरीहरीए भ० ॥ ६ ॥ चारकषायनिवारकतारक पंचमहाव्रतधरीए भ० ॥ ७ ॥ षटकाय रक्षकनहाभयजीपक असरणसर-णकहीजिये ॥ ८ ॥ एहवासदगुरुनीबलिहारी सरणग्रहीनिसतरीए भ० ॥ ९ ॥ गौतमस्वामी-समामुनिउत्तम सर्वजीवसमधरीए भ० ॥ १० ॥ रिदयकमलनितप्रातिरावीजे आनंदशिवपदलहीए भ० ॥ ११ ॥ इति देशना सपूर्ण ॥



॥ अथवधाव्रां ॥

भवितुमे वदोरे शीतलजिनपतिरे ए चाल. सुखकरस्वामीरे श्रीतीर्थंकुररे वरधमान जिनराज। दरशन जेहनोरे दरपणज्युंदीपेरे सोभततेजसमाज॥ भाविजनवंदोरे भावेगच्छपतिरे॥ १ ॥ तसुपटराजेरे

सुधरमगणधररे ज्ञाताद्वादश अंग। जंबुस्वामीरे शिष्यसोहामणोरे चौदपुरवधरअंग ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभवसंञ्यभवजगमेंपरगडारे श्रीजसोभद्रमुणिंद। श्रीसंभुतविजयभद्रबाहुजीरे श्रीथुलभद्रदिणंद भ० ॥ ३ ॥ एमअनुक्रमदशपुरवधररे हुवावयरमुणीश। श्रीजिनमतदीपायोभूतलेरे सुरनरनामतसीस भ० ॥४॥ तासपरंपरचंद्रकुलेभलारे श्रीकोटीकगणधार। श्रीउद्योतनसूरिसुहामणारे वगरीसाखमझार भ.।५। वरधमान परमुख शिष्यजेहनारेचारअशी परमाण। गच्छचोराशीप्रगट्याल्यांथकीरे जाणचतुरसुजाण भ० ॥६॥ तासशीषजिनेश्वरसूरिजीरे दुर्लभरायसमक्ष। खरतर विरुदलह्योतेरुवडोरे मठपतिजीतप्रतक्ष भ० ॥७॥ नवअंगीवृतिकारकदीपातारे श्रीअभयदेवसूरिराय। श्रीजिनवल्लभजिनदत्तगच्छपतिरे श्रीजिनकुशलअमाय भ० ॥ ८ ॥ परमप्रभावकइणगछमेथयारे आचारजगुणवंत। शुद्धसमाचारी जगतेहनीरे सुणि हरषितहोय संत भ० ॥ ९ ॥ शुद्धपरंपरथयाअनुक्रमेंरे श्रीजिनलाभसूरीश। तासपटोधरजगमांपरगडारे श्रीजिनचंदमुणीश भ० ॥ १० ॥ तेजप्रतापे जीत्यो दिनमणीरे सोम्यपणें द्विजपत्ति। गंभीरगुणसागरेनजीतीयोरे सुरसेवेदिनरत्ति भ० ॥ ११ ॥ स्यादवादजिनधर्मवखाणतारे नयनिक्षेपविचार। भंगपदारथ-

अतिविस्तारतारे भावेभविहितकार भ० ॥ १२ ॥ ज्ञानपूरदकक्रियासाधेभलीरे जिनवाणी अनुसार। एहनेसेवोरे क्युसुलाभमोरे थायम्फलअवतार भ० ॥ १३ ॥ सुरतरछांडीबांवलआदरेरे कोइनरमूढगिमार । एडखाणोसाचोमतकरोरे लहिएवोगणधार भ० ॥ १४ ॥ नामधारकआचारजछेघणारे पंचमकालमझार । पिणइणसरीखोजगमांकोनहिरे स्वपरतारणहार भ० ॥१५॥ वाचकलावण्यकमलपसायथीरे कमलसुंदरनीवाण । जेमांनसीतेसुखनितपामसीरे पातिकनीकारिहाण भ० ॥ १६ ॥ इति वधावो ॥

॥ वधावो ॥

मोति यंडे मेह वरसीयो सखिआज हुवो आणद पूज पधाया विहरतां नामे सौभाग्यसुरिंद ॥ जिनहर्षसूरिंदनोनंदरे सदगुरुसुरतरुनोकदरे । मुखसोहे पूनमचंदरे सखी मोतीडे मेह० ॥ १ ॥ क्षांतिगुणकरीशोभता सखिपंचमहाव्रतधार । वरछनीसगुणेसदा विचरेजेनिरतिचाररे ॥ रशीआज परउपगाररे उपशमरसना भंडाररे । पालेपंचाचाररे सखी मोती० ॥ २ ॥ मेघतणीपरे गाजता सखिमीठीजेहनीवाण ॥ आपतरे परतारता गुणगणरतनारीखाणरे

सहुआगमनाजेजाणरे तपेजिनझलहलभजभाणरे। तेहनो अतिशय विण्णाणरे सखी मोती० ॥ ३ ॥ परतिखसुरतरु सारखा। सखीइणपंचमकाल साथे जेहने शोभतां। मुनिवरजीसामोतीमालरे केइ- थिवरने केइवालरे वंदीजेतेहत्रिकालरे। सखी मोती० ॥ ४ ॥ सूरीसकलसिरशेहरो सखीख- रतरगछसिणगार जैनधर्मदीपावता महिमाजेहनी अपाररे लहुसंघतणासिरदाररे। सखिसुमतितणा भरताररे जेहनेप्रणमेंनरनाररे सखी मोती० ॥ ५ ॥ सूत्रअरथविस्तारता सखिदेताधर्मोपदेश दान शीयलतपभावना बारैभावनासुविशेषरे द्रव्यादिक अर्थ निशेषरे गुणअरुपर्यायप्रदेशरे सखी मोती० ॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना सखिअमृतवचन- विलास क्षणमें कर्मसमूहनो सखिनिश्चैहोवैनाशरे थायैनिजज्ञानप्रकाशरे कहैवालसुगुरुसहवासरे करतानिजरूप सुभाषरे सखी माता० ॥ ७ ॥

॥इति वधावो.॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदलविंदलीदे ए चाल ॥

जिनसाशण जयकारी जगगुरु गोतमगणधारीरे सहीयां गुंहली करो गुंहली करो गुरुसंगे गुरुभाक्ति

तणें उछरगेरे सहीयां. ॥ विचरतां मुनिराया राजग्रहीनगरी आयारे सही. ॥१॥ पंचेंद्रीविषयनिवारी नवविधब्रह्मव्रतधारीरे सही. च्यारकषायकुटाले पचमहाव्रतसुधापालैरे सही. ॥ २ ॥ सेवैपंचाचार धरेपंचसुमतिमनुहाररे सही त्रिणगुप्तिविलिछाजै इमछत्रीसगुणेंगुरुराजैरे सही. ॥ ३ ॥ चरणकरण गुणसंगी शुद्धातम अनुभवरंगीरे सही. उत्सर्गने अपवादी बहुनयगम भंगप्रवादीरे सही० ॥ ४ ॥ मोक्षमारगउपदेशी धरेधरमध्यानशुभलेशीरे सही० रत्नत्रय अभ्यासी भविजनचितकमलविकाशीरे सही० ॥ ५ ॥ श्रेणिकनरपति आवै गणधरवदन शुभभावैरे सही. चेलणास्वस्तिकपूरे मोहतिमिरभरमनेंचूरेरे सही ॥ ६ ॥ निसुणीगुरुमुखवाणी समकितनिरमलकरेंश्राणीरे सही. श्रुतसेवा जे करस्ये ते कीर्त्तिसागरपदवरस्येरे सही. ॥ ७ ॥ इति गुहली संपूर्णम् ।

॥दं०॥ आज आंपं चालो सहियर सद् गुरुवंदण जइये । सद् गुरुवंदणजइये आपण सद्गुरुवंदन जइयेरे ए आंकडी॥ देशविदेशविहारकरता ज्ञान ध्याननाद रिया दयासिंधुउपगारकरेवा गुरुपधारा अहियारे आज ॥ १ ॥ क्रोध मान मद दूर करीनें, अतिशयगुणना दरिया, एवा कृपाचंद मुनिवरजी ॥ मानुकल्पद्रुमवरियारे आज. ॥ २ ॥ जिनसाशन-

स० ॥१६॥ मुनिजीनीदेशना बहुसारीरे भविजीवने लागेछे प्यारीरे, प्रतिबोधपाम्यानरनारी स० ॥ १७ ॥ मुनीवरसंयमसूरारे, मुनिक्रियामाहेपूरारे परिणामे मुनीजीअतिरूडा स० ॥ १८ ॥ मुनीजीए लाभघणेरालीधारे, श्रीसंघनाकारजसिधारे, उपगारमहामुनिजीए कीधा स० ॥ १९ ॥ मुनिजीनुंनामघणुं सारुंरे । कृपाचंदजी लागेप्यारुंरे । जिनसाशन घणुंअजवाल्युं स० ।२०। जेहमुनीवरना गुणगासेरे । प्राणीपापरहिततेथासेरे । वलीशिवपूरिनयरीये जासे स० ॥ २१ ॥ चतुर्मासइणीपरेगायोरे, चतुरविधश्रीसंघ सवायोरे ॥ तिहां आनंद मंगल वरतायो । स० ॥ २२ ॥ इति चोमासो सं० ॥

अथ गुंहली लिख्यते ॥ विचरता गामोगाम मुनि आव्या एणे ठाम आछेलाल, बहु परिवारेपरिवर्याजी ।१। मारवाड देशउत्पन्न। वीकानेरसंपन्न॥ आछेलाल ॥ माता अमरादे जनमियाजी ॥ २ ॥ पालेपंचआचार । छकायजीवप्रतिपाल । आछेलाल सुमतिगुपती सुमालताजी ॥३॥ करता उग्रविहार ॥ आव्या कच्छमुजार । आछेलाल भद्रेसर पधार्याजी ॥ ४ ॥ देशविदेशनालोक वांदवा आवेथोक । आछेलाल । नयगम प्रसनपूछताजी ॥ ५ ॥ वांचे सूत्रसिद्धांत । नंदीसूत्रमहंत ॥ आछेलाल । संदे-

हभांगे सहुतणाजी ॥ ६ ॥ चतुरचेलातुमच्यार विद्यातणाभंडार । आछेलालगुरु आणाशिरधारताजी ॥७॥ गुहली करी चित्तलाय पामी आप पसाय आछेलाल । इणीपरे सेवककरेवीनतीजी ॥८॥ इति ॥

॥ पुनः गुहली ॥ जीरेमारे प्रणमुश्रीजिनवरपाय । मुकीमननो आमलोजीरेजी॥ जीरेमारे पामीनासपसाय खरतरपतिकृपाकरोजीरेजी ॥१॥ जीरेमारेपनरमां श्रीजिनराय । धर्मनाथजी सुखकरोजीरेजी ॥ जीरेमारेवीकानेर उत्पन्न, गुरु कुलवासेदिनभणी जीरेजी ।२। जीरेमारेरतनत्रयनिधान । मानाअमरादे जनमीयाजीरेजी जीरेमारेग्रहगणमांजोतीसार ॥ सुरजकलाअतिसारीछेजीरेजी ॥३॥ जीरेमारेमुनिपरिवारमांनेम ॥ गुणसत्यावीसेशोभताजीरेजी । जीरेमारे कच्छदेशनालोक आतमगुणेअनुसरेजीरेजी ।४। जीरेमारे मांडवीनगर मुझार ॥ श्रावक लोकसुखी आवशेजीरेजी । जीरेमारे सुगुरुचरणपसाय रागीसोभागी करेविनतीजीरेजी ॥५॥ जीरेमारे नरनारीना बहुवृंद ॥ आवे बहु आडंबरेजीरेजी। जीरेमारे नववाडशशीसणगार ॥ माणकवाट लावेगुहलीजीरेजी ॥६॥ जीरेमारे आतमबाजोटपीठ कंकुवाट पूरे साथीओजीरेजी । जीरेमारेसमकीत श्रीफलहाथ । ललि ललि लीये लुछणाजीरेजी॥७॥ जीरेमारे गुंगट खोल्या गाट । विचविचगुरुमुख

जोवतीजीरेजी । जीरेमारे देशना अमृतधार ॥ शोभागीशोभारसलीएजीरेजी ॥८॥ जीरेमारे पनवणा सुत्रनी वात । स्यादवाद रचना करेजीरेजी । जीरेमारे खरतरगछसिणगार । मुनीकृपाचंदजी मयाकरोजीरेजी ।९। जीरेमारे जगमेंतीर्थनाथ तिर्थवंदावोकृपाकरोजीरेजी । जीरेमारे मारवाड देशनालोक विनतीकरे बहुपरेजीरेजी ॥१०॥ जीरेमारे पेमकरणभाई करे अरदास । पालीताणे चोमासुं पधारजोजीरेजी । जीरेमारे अमने उजमणाना भाव । ते तुमे आवे नीपजेजीरेजी ॥११॥ जीरेमारे विनतीमानो अम एक लाभलेशोतुमे घणाजीरेजी । जीरेमारे पामी आपपसाय । आणंदमुनीजेतपत्तपेजीरेजी ॥ १२ ॥ जीरेमारे कुसलसूरिंदपसाय ॥ अमआसाफलीघणीजीरेजी । जीरेमारे साचा सुगुरुनेपसाय घरघरमंगलवरतीयाजीरेजी ॥

॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ ई० ॥ सुणयामें सदगुरु म्हारा थारा वचन सुहामणारे ॥ म्हाराज थारी वाणी मनमोहनीरे माहाराज० ॥ १ ॥ थारी वाणी अमृतध्वनि गाजे । जेहथी सब पातिक भाजै था० ॥२॥ गुरु पांचे समते समिता । थेतो तीनुं गुपतिये गुपता था० ॥ ३ ॥ गुरु पंच महाव्रत पालै । एतो स्वैतपक्ष अजुवाले

था. ॥ ४ ॥ गुरु धरमना धारक। एतो दुर्गतिना निवारक था.॥५॥ गुरु वचनामृत रस पीनो। एतो श्रोताशुणमनभीनो था. ॥ ६ ॥ निसदिन गुरुमुख निरखै। चात्रक जिम भविजन हरखै था. ॥ ७ ॥ शुभ उगणीसैं चमालीसै। फागण शुदि अति मनहीसै था. ॥ ८ ॥ श्री नागपुर नगर सुहावै। चारित्र सुगुरु मन भावै था. ॥ ९ ॥ सहु संघ मिल बहु भावै। कृपाहीसे वंछित पावै था. ॥१०॥

॥ इति गुवली ॥

॥ पुनः गवली प्रारंभः ॥

हो प्रीतमजी प्रितकी रीत। अनीतकरी चित्त धारिये ए देशी. सुण ।हेली भगवती सूत्रनी वाणी श्रवणरस पीजीयै। गुरुगुणवंता वादीने नरभवनो लावो लीजीये॥ गुरुउपगारी प्रवहणसमसंसार-समुद्रतरीजीये सुण. ॥ १ ॥ पचम अंगे भगवती जाणो, वलि विवाहपन्ननीमनआणो। वीरजगत गुरु वखाणो सुण ॥ २ ॥ षटद्रव्यजिहांवखाण्यांछे भावभगानिक्षेपाजाणयाछे । नयदुविधसप्तकरी आण्या छे सुण. ॥ ३ ॥ सुयखध एहनो इक कहीये शतकइकतालीससगदृहियै। एहतुणनां श्रोताजन मोहियै सुग. ॥४॥ पचांगी एहमां छाजे शुद्ध परंपरने काजै। वलिजीत तणां डका वाजै सुण, ॥५॥ सुंदरवर सखीयनचरणी मधुर स्वरगावेवरतरुणी।

करे गवली अनुपममनहरणी सुण. ॥ ६ ॥ द्रव्य भाव पूजा कीजे ज्ञानभक्ति करी द्रव्य खरचीजे कृपाचंद्र शिवसुखलीजे सुण. ॥ ७ ॥

॥ इति गवली संपूर्णम् ॥

॥ द० ॥ सहीयल म्हारी सदगुरु आव्या, आज चालो आपण जइयेरे ॥ स० ॥ वांदवारे महारराज ॥ १ ॥ स० ॥ देसविदेशमझार ग्रामनगरपुररुडारे ॥स०॥ विचरतारे महारराज ॥ २ ॥ स० ॥ पंचाचारप्रवीण त्रिकरण सुद्धसंजमरे ॥ स० ॥ पालताहो महारराज ॥ ३ ॥ स० ॥ एषणादोषवैयाल सुत्रे जिनवरभाख्यारे ॥ स० ॥ टालतारे महारराज ॥स०॥४। षटकायाप्रतिपाल। मुनिवरमारग साचोरे ॥स०॥ उजवालतारे महारराज ॥ ५ ॥ स० ॥ गीतारथ गुरुराज । सूत्रसिद्धांत वखाणेरे ॥ स० ॥ भवीपरेहो महारराज ॥ ६ ॥ स०॥ वाणी गहिर गंभीर। जिम वरसाले गाजेरे स० ॥ जलधररमहारराज ॥७॥ स० ॥ आजभलो सुविहाण एहवासदगुरु भेटयारे ॥ स० ॥ उमंगसुरे महारराज॥ स० ॥८॥ गोतमने अनुहार ॥ स० ॥ जंगमसुरतरु सरिषारे ॥ स० ॥ सुषकरोरे महारराज ॥ स० ॥ ९ ॥ एहगुरुनो संजोग कृपाकरीने मिलजोरे ॥ स० ॥ सुजभणोरे महारराज ॥ १० ॥ इतिपदम् ॥ इति पूजा स्तवनादि संपूर्णम ॥